पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

जून 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
राजभाषा विभाग

प्रतापराव जाधव
संसद सदस्य (लोक सभा)
सभापति:
ग्रामीण विकास संबंधी स्थायी समिति
पूर्व मंत्री, महाराष्ट्र सरकार
सदस्य:
- संसदीय राजभाषा समिति
- आवास संबंधी समिति, लोक सभा
- परामर्शदात्री समिति, श्रम एवं रोजगार मन्त्रालय
- सामान्य प्रयोजनों संबंधी समिति, लोक सभा

सत्यमेव जयते

PRATAPRAO JADHAV
Member of Parliament (Lok Sabha)
Chairperson:
Standing Committee on Rural Development
Former Minister, Maharashtra Government
Member:
- Committee of Parliament on Official Language
- House Committee, Lok Sabha
- Consultative Committee, Ministry of Labour and Employment
- General Purposes Committee, Lok Sabha

दिनांक - 13-05-2022

प्रिय श्री एस. कृष्णन जी,

संसदीय राजभाषा की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को पंजाब एण्ड सिंध बैंक की शाखा कुल्लू में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की जांच की गई। उक्त तिथि में आपके कार्यालय सहित कुल 08 कार्यालयों का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

इस निरीक्षण कार्यक्रम/दौरे के लिए आपके बैंक को समन्वय कार्य का दायित्व भी दिया गया था। आपकी संस्था ने अत्यंत प्रसन्नता के साथ समन्वय कार्य के दायित्व का निर्वहन पूर्ण निष्ठा से किया, जिससे समिति को निरीक्षण कार्य में किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं हुई। निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक के प्रधान कार्यालय से कार्यकारी निदेशक डॉ. रामजस यादव, मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री कामेश सेठी तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा भी उपस्थित रहे। इन अधिकारियों ने अपनी पूरी टीम के साथ निरीक्षण कार्य को सफल बनाने के लिए समिति सचिवालय के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखा।

समन्वय के कार्य को सुगमतापूर्वक निष्पादन तथा समिति सचिवालय को सहयोग प्रदान करने के लिए समिति की ओर से आपका आभार। समिति आशा करती हैं कि भविष्य में भी आपका बैंक इसी प्रकार अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करेगा तथा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में अपने सक्रिय भूमिका का निर्वहन जारी रखेगा।

शुभकामनाओं के साथ !

शुभेच्छु,
(प्रतापराव जाधव)

श्री एस. कृष्णन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी
पंजाब एण्ड सिंध बैंक
प्रधान कार्यालय, बैंक हाउस21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

Office Room No. 120, Parliament House Annexe Ext. Building, B-Block, New Delhi-110001 Tel. 011-23035763, 21410263, 21410264
Res.: 23, Ashoka Road, New Delhi-110001 Tel. 011-23740412, 23345478, Fax: 011-23740413
Off.: Buldhana: Khasdaar Jansampark Karyalya, Jijamata Kreeda School, Building (Maharashtra)-443001
Telefax: 07262-247777, E-mail: prataprao.jadhav@sansad.nic.in & jadhavprataprao25@gmail.com

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली – 110008

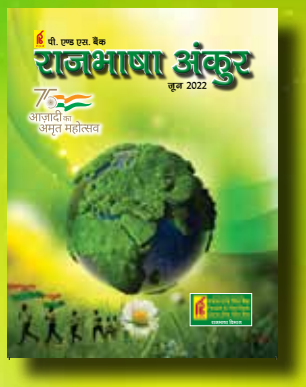

जून 2022

मुख्य संरक्षक
श्री स्वरूप कुमार साहा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र
कार्यकारी निदेशक

डॉ. रामजस यादव
कार्यकारी निदेशक

मुख्य संपादक
श्री कामेश सेठी
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक एवं प्रकाशक
श्री निखिल शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती मोनिका गुप्ता, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री मोहन लाल, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : ho.rajbhasha@psb.co.in
पंजीकरण सं.: एफ.2(25) प्रैस. 91
(पत्रिका प्रकाशन तिथि : 30/07/2022)

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट–4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 98112 69844
ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	हरित पहल से ही देश की समृद्धि संभव	4-7
5.	बैंकिंग में ग्राहक सेवा के विविध आयाम	8-11
6.	हिंदी/पंजाबी कार्यशालाओं का आयोजन	12-13
7.	मानस पटल में अंकित अविस्मरणीय दिन -संस्मरण	14-15
8.	जरा सोचिए !	15
9.	राजभाषा हिंदी की उपयोगिता एवं महत्व	16-17
10.	ग्राहक सेवा का 115वाँ वर्ष	18-19
11.	ग्राहक के मुख से	20
12.	अंचल कार्यालयों में स्थापना दिवस समारोह 2022	21
13.	संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति का कुल्लू दौरा	22-23
14.	आजादी के 75 वर्ष -उपलब्धियाँ व चुनौतियाँ	24-27
15.	काव्य-मंजूषा	28-29
16.	सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर सुरक्षा की चुनौतियाँ व समाधान	30-33
17.	प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	33
18.	नराकास उपलब्धियाँ	34-35
19.	अच्छे स्वास्थ्य का महत्व	36-37
20.	मूल उड़िया लेख	38-39
21.	मूल उड़िया लेख का हिंदी अनुवाद	40-41
22.	कुत्तों की कुत्ताइयत	42-43
23.	हमें इन पर गर्व है।	44

आपकी कलम से

आपके कार्यालय की उक्त पत्रिका का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद! पत्रिका की सामग्री विषय–वैविध्य से परिपूर्ण है। निश्चित रूप से आपकी पत्रिका राजभाषा हिंदी के धरातल पर सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने में सहायक है। आपका यह प्रयास बैंक के स्टाफ सदस्यों में नव–प्रतिभा को विकसित करने में भी उपयोगी प्रतीत होता है।

उक्त पत्रिका में 'सपने', 'कार्टून–कोना', 'नारीः अतीत से वर्तमान तक', 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन', 'मूल संथाली लेख और उसका हिंदी अनुवाद' तथा 'डिजिटल विस्तार के साथ डिजिटल लैंडिंग की संभावनाएं' जैसे विषय पत्रिका को अधिक समृद्ध बनाते हैं और पाठकों को अद्यतित करते हैं। विविध मौलिक रचनाओं का समावेश पत्रिका की पठनीयता को अधिक स्वीकार्यता प्रदान करता है। इससे पाठक वर्ग में हिंदी के प्रयोग के प्रति उन्मुखता बढ़ेगी और कार्यालय में हिंदी के प्रयोग का वातावरण उत्तरोत्तर बेहतर होगा। पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद।

हमें आशा है कि भविष्य में भी हिंदी को सशक्त बनाने में कलात्मकता एवं नवोन्मेषिता से परिपूर्ण आपका यह प्रयास जारी रहेगा।

काजी मु. ईसा
महाप्रबंधक, भा.रि.बैंक, केंद्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग, मुंबई

बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक मार्च 2022 प्राप्त हुआ जिसके लिए आपका आभार। पत्रिका में प्रकाशित आलेख 'नारीः अतीत से वर्तमान तक' में नारी सशक्तिकरण व नारी के विभिन्न रूप को काफी अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है। 'मैसूर यात्रा' नामक यात्रा–वृतांत में हमें मैसूर के इतिहास के साथ–साथ बैंकिंग में साइबर अपराधों के स्वरूप एवं सुरक्षात्मक उपाय के विषय में भी जानकारी प्राप्त हुई। अंक में प्रकाशित लेख में लता मंगेशकर के पूरे जीवनकाल को काफी अच्छे ढ़ग से प्रस्तुत किया हैं। पत्रिका में प्रकाशित अन्य आलेख भी विभिन्न जानकारियों से परिपूर्ण हैं जैसे डिजिटल लैंडिंग, मियादी मार्च, मेरे प्रिय कवि निराला, कहानी–चलो, अब लौट चले! आदि। पत्रिका में ग्राहक के मुख से कोना काफी अच्छा हैं इससे ग्राहकों में अपनी बैंक की विश्वसनीयता के बारे में पता चलता हैं। सभी लेखकों को साधुवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेखन सामग्री के चयन तथा मनमोहक साज–सज्जा के लिए संपादक–मंडल बधाई के पात्र हैं। आपके सार्थक प्रयासों की सराहना के साथ पत्रिका के आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

सुधीश बाजपेयी
अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, जयपुर

हमें आपके बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" की प्रति प्राप्त हुई–धन्यवाद!

आपकी इस पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख एवं रचनाएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। इसमें बैंक की गतिविधियों एवं अन्य खबरों का व्यवस्थित रूप से समावेश किया गया है। इसके प्रकाशन से जुड़ी टीम का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। आशा है भविष्य में भी आप अपने स्तर पर हो रहे राजभाषा कार्यान्वयन व तत्संबंधी गतिविधियों से हमें अवगत कराएंगे।

उमानाथ मिश्र
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कॉर्पोरेट केंद्र, मुंबई

"राजभाषा अंकुर" का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद! आपकी पत्रिका की विषय–वस्तु ज्ञानवर्धक एवं पाठकों की रुचि के अनुकूल है। आपने बैंकिंग के साथ–साथ अन्य सामयिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है।

'नारी : अतीत से वर्तमान तक' आलेख में नारी जीवन की यात्रा को सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है। लता मंगेश्कर जी की संगीत यात्रा पर ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई है। 'डिजिटल लैंडिंग' एवं 'मियादी मार्च' में बैंकिंग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गई है। हिंदी के छायावादी युग के महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की साहित्यिक यात्रा पर रोचक जानकारी है। संथाली संस्कृति के संबंध में रोचक एवं ज्ञानवर्धक आलेख दिया गया है। अन्य विविध सामग्री पठनीय एवं रुचिपूर्ण है। पत्रिका के कुशन संपादन के लिए बधाइयां तथा पत्रिका के अगले अंक हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

अजय कुमार
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), इंडियन बैंक, कार्पोरेट कार्यालय, रायपेट्टा, चेन्नै

बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका "राजभाषा अंकुर" का नवीनतम मार्च–2022 अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका के कवर पृष्ठ ने गागर में सागर भरने का काम किया है। पत्रिका में संकलित सभी लेख, कहानियाँ, कविताएं आदि अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका में संकलित अन्य भाषा के लेख एवं उसका हिंदी अनुवाद अपने आप में नवोन्मेषी कार्य है, इस प्रकार के पहल से हमें क्षेत्रीय वेशभूषा, रहन–सहन, पर्व–त्यौहार, विधि–विधान, भाषा–बोली इत्यादि के विषय में जानकारी मिलती है। अन्य शब्दों में विभाग की पत्रिका विविधता से परिपूर्ण है।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु संपादक मंडल को शुभकामनाएं। मैं आशा करता हूँ कि राजभाषा अंकुर, आगामी वर्षों में भी इसी तरह नई ऊचाइयों को छूती रहेगी। आगामी अंक की प्रतीक्षा में.....

प्रवीण कुमार मोंगिया
क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

प्रासंगिक लेखों तथा विविध गतिविधियों को समाहित करते हुए बैंक की हिंदी गृह–पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का जून–2022 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका के माध्यम से आपके साथ संवाद का यह अवसर मेरे लिए विशेष होता है। वित्तीय वर्ष 2020–21 की अंतिम तिमाही के प्रदर्शन में निरंतरता रखते हुए बैंक ने वित्तीय वर्ष 2021–22 के दौरान ₹1039 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया है। यह बैंक के प्रत्येक कर्मचारी की प्रतिबद्धता, समर्पण व दृढ़ संकल्प का ही प्रतिफल है।

हाल ही में बैंक ने 24 जून, 2022 को अपना 115 वाँ स्थापना दिवस मनाया है। इतने वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी बैंक, अपने संस्थापकों के ध्येय के लिए संकल्पित है। सामाजिक उत्थान तथा उत्कृष्ट ग्राहक–सेवा के साथ हम लाभ दर्ज करने में सफल रहे हैं। प्रधान कार्यक्रम सहित बैंक के अंचल कार्यालयों व शाखाओं में स्थापना दिवस समारोह अत्यंत उत्साह से मनाया गया। स्थापना दिवस के अवसर पर बैंक ने ग्राहक–सेवा को अपेक्षाकृत बेहतर बनाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारंभ की है जिनमें पीएसबी नन्हें चमन, पीएसबी स्मार्ट बिजनेस, पीएसबी डिजीबिज़, पीएसबी गृह–लक्ष्मी, पीएसबी–द पॉवर ऑफ 400 डेज, पीएसबी ई–बंधक, पीएसबी जीएसटी ईज ऋण इत्यादि प्रमुख है।

पत्रिका के इस अंक में पाठकों के लिए प्रासंगिक लेखों को स्थान दिया गया है। साथ ही हिंदी अनुवाद सहित क्षेत्रीय उड़िया भाषा का लेख, विशेष स्तंभ 'जरा सोचिए' तथा 'कार्टून–कोना' यथावत है। 'कार्टून–कोना' हमेशा की तरह हमें गुदगुदाता है। हाल ही में संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप–समिति द्वारा बैंक की कुल्लू शाखा के राजभाषाई निरीक्षण को पत्रिका में विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। पृष्ठों के नीचे भाग में विशेष व्यक्तियों के कथन सूक्तियों के रूप में दिए गए हैं।

आशा है पत्रिका का यह अंक आपकी रुचि के अनुकूल होगा तथापि पत्रिका के लिए अपने विचार से हमें अवश्य अवगत कराएं।

(कामेश सेठी)
महाप्रबंधक सह
मुख्य राजभाषा अधिकारी

जी. एस. ठाकुर

हरित पहल से ही देश की समृद्धि संभव

विश्व पर्यावरण दिवस विशेष

हरित पहल का प्रत्यक्ष अर्थ है प्रकृति के समीपस्थ होना, प्रकृति में हरियाली विस्तार के लिए प्रयास, पर्यावरण के अनुकूल कार्य करना तथा प्राकृतिक संसाधनों का औचित्यपूर्ण उपभोग। हम प्रकृति के जितने समीपस्थ होंगे या प्रकृति को उसके मूल रूप में संरक्षित रखेंगे, पर्यावरण उतना ही मानव जीवन के अनुकूल होगा। हरित पहल के लिए यह ध्यान रखना आवश्यक होगा कि **इसमें साधन और साध्य दोनों ही हरित हो**। व्यवसायिक क्षेत्र में हरित पहल का अर्थ है अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने के साथ–साथ प्रकृति का संरक्षण। यूँ तो हरे रंग को विश्वास, खुशहाली, समृद्धि और प्रगति का प्रतीक माना जाता है लेकिन जब यह प्रकृति से जुड़ जाता है तो आँखों को सुकून प्रदान करता है तथा मन–मस्तिष्क को आनंद से सराबोर कर देता है, शरीर में सकारात्मकता का संचार करता है। हरी–भरी प्रकृति, भौगिलिक वातावरण के साथ–साथ मानव स्वास्थ्य के लिए सभी तरह से लाभदायक है।

प्रकृति, प्राकृतिक है, शुद्ध है, वह है जो प्राचीन व प्राथमिक रूप में उपलब्ध है। वृक्ष, पेड़–पौधे, नदी, तालाब, पादप, कीट–पतंगे, वायु, सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, आकाश, मानव, पारिस्थितिकी–तंत्र सभी प्रकृति के अंग है। प्रकृति वह है जो अपनी उत्पादों का स्वयं उपभोग नहीं करती वरन इसका संवितरण सभी में समान व अपेक्षित मात्रा में करती है। कहने का तात्पर्य कि प्रकृति सभी तरह से पूजनीय है। भारतीय संस्कृति तथा परंपराएं हमें प्रकृति का सम्मान करना सिखाती है। हमारे अनेक पर्व–त्यौहारों प्रकृति पूजा से संबंधित है जिससे मानव व प्रकृति के मध्य संबंध प्रगाढ़ बना रहे। प्रकृति, वातावरण के संतुलन में प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अपनी भूमिका निभाती है और स्वस्थ पर्यावरण का अर्थ है अधिक टिकाऊ भविष्य। कभी भी प्रकृति प्रदूषित नहीं हो सकती जबकि पर्यावरण में असंतुलन होने की स्थिति पर्यावरण का प्रदूषित होना कह सकते हैं। देश ने प्रगति तो की लेकिन केवल आर्थिक व सामाजिक रूप से। इन सबके बीच समृद्धि कहीं नेपथ्य में चली गई। अन्य

शब्दों में कहा जाए तो हम प्रकृति उन्मुख विकास से निरंतर दूर होते चले गए। जहाँ विकास का संबंध केवल भौतिकता से हैं वहीं समृद्धि किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले व्यक्तियों के स्वास्थ्य, औसत आयु, गरिमामय जीवन, उनके लिए स्वच्छ पर्यावरण की उपलब्धता, प्राकृतिक संसाधनों का दीर्घकाल तक समान और संतुलित संवितरण, नागरिकों के लिए सौहार्द्रपूर्ण वातावरण, लोक–संस्कृति की बहुलता इत्यादि से संबंधित है। जहाँ भौतिक विकास त्वरित होते हैं वहीं समृद्धि दूरगामी होती है।

भारत जैसे देश में जिसे प्रकृति ने विविध प्राकृतिक रंगों से सराबोर किया है, अनेक ऋतुओं से सुसज्जित किया है, जीवनदायिनी नदियाँ प्रचूर मात्रा में सुलभ कराए हैं, वहाँ हरित पहल क्यों और कितना महत्वपूर्ण है? हरित पहल से न केवल हम प्रकृति को यथास्थिति बनाए रखने का प्रयास करते हैं बल्कि पर्यावरण को क्षति पहुँचाने से रोकते हैं। पहले तो हम औद्योगिक विकास के नाम पर प्रकृति से दूर होते चले गए और जब हमें इसके प्रतिकूल प्रभाव मिलने लगे तो हमने हरित पहल का आश्रय लिया। मानव जीवन और व्यवसाय के लिए हरित पहल का चयन करना अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। मानव एवं प्रकृति की दोस्ती जितनी गहरी होगी, प्रकृति उतनी

यदि कोई तरीका दूसरे तरीके से बेहतर है तो आप निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वो प्रकृति का तरीका है। – अरस्तू

ही खिलखिलाएगी और प्रकृति जितनी खिलखिलाएगी मानव जीवन उतना ही आनंद और गरिमा से परिपूर्ण होगा।

जैसे–जैस हम सुलभग्राही होते गए वैसे–वैसे हमने हरित पहल की चुनौतियों को भी पुष्ट किया है। सुलभता ग्राह्य करते समय इस ओर भी ध्यान आकृष्ट किया जाना चाहिए था कि क्या हम वापस मूल रूप में लौटने के लिए अपने रास्ते बंद करते जा रहे हैं। विकास के नाम पर मानव समाज ने जितना प्रकृति का दोहन किया है या प्रकृति के विरुद्ध कृत्य किए हैं उनके परिणाम अनेक आपदाओं के रूप में या तो दृष्टिगत हो चुके हैं या हो रहे हैं या निकट भविष्य में इनकी प्रबल संभावनाओं से इंकार नहीं जा सकता है। मानव समाज ने अलग–अलग रूपों में पर्यावरण को दूषित किया है जिनके प्रतिकूल प्रभाव से निजात पाने के लिए हरित पहल आवश्यक है। यदि हमने समय रहते इन प्रदूषणों को नियंत्रित नहीं किया तो मानव समाज को ही इसके सबसे बुरे परिणाम भुगतने होंगे। पारंपरिक प्रदूषण यथा वायु प्रदुषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण इत्यादि के साथ–साथ गैर–परंपरागत प्रदूषण पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जिनके कारण हमें हरित पहल की आवश्यकता पड़ी।

प्रकाश–प्रदूषण, प्रदूषण का वह रूप है जिसके विषय में अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। किसी विशेष दिन के लिए किए गए साज–सज्जा में कृत्रिम रोशनी, प्रसन्नता व्यक्त करने का माध्यम हो सकती है लेकिन आएदिन इन कृत्रिम प्रकाश का प्रयोग कई रूपों में पर्यावरण पर प्रतिकूल रूप से प्रभावित करता है। औद्योगिक क्रांति से पूर्व देश में त्यौहारों में कृत्रिम रोशनी का स्वरूप इतना हानिकारक नहीं होता था, दरअसल ये रोशनी भी लगभग प्राकृतिक ही हुआ करती थी। एक अध्ययन के अनुसार भारत में कृत्रिम रोशनी जुगनुओं के प्रजनन पर असर डाल रही है जिसके कारण ये कीट प्रजनन नहीं कर पा रहे हैं। एक भौगौलिक क्षेत्र विशेष के लिए किए गए अनुसंधान के आधार पर लगभग 15 वर्षों में जुगनुओं की औसतन संख्या में 96% की कमी पाई गई है। पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को अनुरक्षित करने के लिए प्रकृति के सभी कीट–पतंगों का महत्वपूर्ण योगदान है। इनका विनाश पारिस्थितिकी असंतुलन को बढ़ाता है। आधुनिक प्रकाश व्यवस्था मानव कार्य को तो सुगम बनाते हैं लेकिन कीट–पतंगों की घटती संख्या के प्रमुख कारक हैं। यदि इन्हें नियंत्रित नहीं किया गया तो छोटे लेकिन पारिस्थितिकी तंत्र के इन महत्वपूर्ण घटकों की विलुप्ति हो जाएगी।

मृदा प्रदूषण पर चर्चा करें तो भारत में जब खाद्य का संकट गहराने लगा और खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भरता बढ़ने लगी तब सत्तर के दशक में डॉ. एम एस स्वामीनाथन के नेतृत्व में हरित क्रांति ने अपना परचम लहराया। हरित क्रांति तत्कालीन परिस्थितियों के लिए सुखद परिणाम देने वाली रही। इसमें कृषि में उपज बढ़ाने के लिए रसायनिक उर्वरकों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि लगातार उर्वरकों के प्रयोग से खेतों में होने वाली फसल उत्पादन लगातार बढ़ती ही रहे। कुछ समय के लिए कृषि उत्पादन में वृद्धि हो सकती है लेकिन निश्चित समय बाद जमीन या तो बंजर हो जाएगी या फिर उसमें उत्पादन नगण्य रह जाएगा। निहितार्थ यह है कि प्रकृति से उत्पादन और प्रकृति का दोहन दोनों में अंतर है जिसे समझने की आवश्यकता है। कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए उर्वरकों के प्रयोग का चलन सामान्य हो चला है। उर्वरक, पौधों के लिए आवश्यक तत्वों की तत्कालिक पूर्ति के लिए सहायक तो हैं लेकिन इसके दूरगामी दुष्प्रभाव अधिक हैं। मिट्टी में उपस्थित जीवाणुओं तथा सूक्ष्मजीवों के लिए ये घातक होने के साथ–साथ भू–जल को भी प्रदूषित करते हैं।

इसमें कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अपनाए गए कदम में से कुछ तो प्रकृति के अनुकूल थे और कुछ उसे लंबे समय तक हानि पहुँचाने वाले। डीजल से संचालित कृषि उपकरण, कीटनाशकों व उर्वरकों का उपयोग प्रकृति को लंबे समय तक हानि पहुंचाने वाले रहे। परिणाम यह हुआ कि आज तक भारतीय कृषक अपने खेतों की पैदावार बढ़ाने के लिए रसायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग धड़ल्ले से बिना निर्देशों या सावधानियों का पालन किए बगैर कर रहा है। इससे तैयार होने वाले उत्पाद तो स्वास्थ्य को प्रभावित करते ही हैं साथ ही इससे मिट्टी भी प्रदूषित होती है। नए किस्म के बीजों के लिए अधिक उर्वरकों का उपयोग किया गया जिससे मृदा में जहरीले रसायनों की मात्रा बढ़ गई और लाभकारी रोगजनक नष्ट हो गए।

अब प्लास्टिक प्रदूषण पर आते हैं। यह प्रदूषण का ऐसा रूप है जो जल, थल और वायु मंडल को एक साथ प्रभावित करता है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसका प्रतिकूल प्रभाव वर्तमान के

साथ–साथ भविष्य को भी अंधकार में डाल रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार विगत 70 वर्षों में दुनिया में 830 करोड़ टन से भी अधिक का प्लास्टिक उत्पादन हो चुका है। प्लास्टिक जनित वस्तुओं को नष्ट होने में 800 से एक हजार वर्ष का समय लगता है। देश में प्रतिदिन 26 हजार टन से अधिक प्लास्टिक का उत्पादन किया जा रहा है। विश्व के लगभग 40 देश प्लास्टिक कचरे की समस्या से जूझ रहे हैं। यह भी अनुमान है कि लगभग तीन करोड़ टन प्लास्टिक कचरा हर साल सीधे समुद्रों में गिराया जा रहा है। समुद्र में प्लास्टिक के महीन टुकड़े मिलने का ही परिणाम है कि जलीय जीवों के असमय नष्ट होने से जैव–विविधता का संकट उत्पन्न हो रहा है। दूरस्थ क्षेत्रों यानि देश के वे स्थान जहाँ भौतिक सुख–सुविधाएं की सुगम पहुँच नहीं है, इन क्षेत्रों में सामूहिक भोज में पहले पत्तों से बने प्लेटों का उपयोग किया जाता था जिसका निपटान बिना पर्यावरण को क्षति पहुँचाए किया जा सकता था लेकिन वर्तमान में इनके स्थान पर प्लास्टिक से बने प्लेटों व गिलासों का उपयोग हो रहा है जिसका निपटान किसी न किसी रूप में मानव स्वास्थ्य तथा पर्यावरण के लिए नुकसानदायक है।

सिमित वन–क्षेत्र एक गंभीर संकट है। वनों का निश्चित अनुपात में न होना या वन क्षेत्र में मानव का अतिक्रमण या वृक्षों की अंधाधुन कटाई एक प्रकार से प्रदूषण को बढ़ावा देता है। पहले सूखी लकड़ियां ईंधन का प्रमुख स्त्रोत थी लेकिन उस समय वृक्षों की कटाई और वृक्षारोपण समान अनुपात में होता था। वर्तमान में, विशेषकर औद्योगिक क्रांति के बाद त्वरित लाभ के लिए पूरा का पूरा जंगल नष्ट कर दिया जाता है जबकि नियमित अंतराल में वनों से कई प्रकार के उत्पाद हमें प्राप्त होते रहते हैं। पादप और जीव एक–दूसरे के पूरक हैं। वृक्ष, पृथ्वी पर कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित करके जीवों को प्राणवायु का वरदान देते हैं, वातावरण में नमी बनाए रखते हैं और तापमान को नियंत्रित करके जीवनयापन को सुगम करते हैं। वर्तमान में भारत के कुल भू–भाग के 24 प्रतिशत भाग पर वन है जबकि पर्यावरण संतुलन के लिए यह प्रतिशत 33 तक होना चाहिए। पादप छायादार हैं, फलदार हैं, अपने सुंगध से आकर्षित करने वाले हैं, औषधिय गुणों से परिपूर्ण हैं तो क्यों न इनके संरक्षण के लिए सार्थक प्रयास किए जाएं। वनों के इन महत्व को देखते हुए सृष्टि ने जीव के साथ पादप की व्यवस्था सृजित की है।

वृक्षों की अंधाधुन कटाई के लिए कागज उद्योग भी जिम्मेदार है। विभिन्न प्रकार की शासकीय रिपोर्टों के मुद्रण के लिए कागजों की मांग बढ़ने से औद्योगिक कंपनियां अपने मुनाफे के लिए वृक्षों को नष्ट करने में जरा भी परहेज नहीं करते हैं। इसे इस प्रकार समझा

जा सकता है कि देश की न्यायालयीन कार्यवाही में कानूनी प्रक्रिया के दौरान मामले के ब्यौरे से लेकर शपथ–पत्र, गवाही, सबूत इत्यादि गतिविधियों में बड़े पैमाने पर कागज का इस्तेमाल किया जाता है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालयों, संस्थानों, शोध प्रतिष्ठानों आदि में भी कागजों का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में किया जाता है। विद्यालयों में भी बच्चों के लेखन सामग्री के लिए कागज अपरिहार्य हो गए हैं। विश्वविद्यालय तथा विद्यालयों में कागजों के इस्तेमाल पर रोक तो नहीं लगाया जा सकता लेकिन न्यायालय व शासकीय संस्थानों की रिपोर्ट को काग़जों में मुद्रित कराने के स्थान पर उनकी डिजिटल प्रति तैयार की जा सकती है। डिजिटल रूप में रिपोर्ट तैयार होने का लाभ यह है कि इसे परिचालित करने में तो सुविधा होती ही है साथ ही इसे संरक्षित करने और इसके निपटान में कोई समस्या नहीं है। कागज तैयार करने के कारण पेड़ों की कटाई तथा उसमें होने वाली पानी की खपत में बचत होगी। प्रति टन कागज का मुद्रण हमें 24 पेड़ो की लागत देता है। फर्नीचर, पेपर जैसे अनेक उद्योग जो वनों पर निर्भर हैं, में मांग व आपूर्ति में बड़ा अंतर है, इसमें संतुलन बनाने के लिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक वृक्षारोपण किए जाए।

प्राकृतिक आपदाओं के लिए जरूरी नहीं हैं कि उनका कारण भी प्राकृतिक ही हो। वर्तमान में प्राकृतिक आपदाओं का कारण कमोबेश मानवीय हस्तक्षेप हैं। भारत में पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा ऋतु में बादल फटने की घटना की पुनरावृत्ति होती रहती है, जिसके मूल को इस प्रकार समझा जा सकता है कि मानसून के दौरान आर्द्रता के साथ बादल आगे की ओर बढ़ते हैं तो अवरोधक के रूप में जब गर्म हवा का झोंका इससे टकराता है तो बादल के फटने की आशंका बढ़ जाती है। कुल मिलाकर ताप बढ़ना बादल फटने का प्रमुख कारण है। हरित पट्टी का लगातार घटना, जल विद्युत परियोजनाओं के लिए वृक्षों की कटाई, शहरीकरण के कारण ताप वृद्धि, वन क्षेत्रों का संकीर्ण होना बादल फटने के सहायक होते हैं। प्रकृति विरोधी कृत्यों से हम क्षणिक आर्थिक विकास तो प्राप्त कर सकते हैं लेकिन

अनुकूल बनें या नष्ट हो जाएं, अब या कभी भी, यही प्रकृति की निष्ठुर अनिवार्यता है। – एच. जी. वेल्स

समृद्धि हमसे कोसो दूर चली जाएगी। ऐसा नहीं है कि क्षणिक विकास के बदले भी हमें कुछ नहीं भोगना होगा बल्कि इसकी भरपाई समय–समय पर अपने ही विनाश से करना होगा जिसका प्रतिरूप प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दृष्टिगत होता रहता है।

पर्यावरण संरक्षण सहित मानव स्वास्थ्य को बचाने के लिए लिया गया निर्णय सिंगल यूज प्लास्टिक प्रतिबंध हरित पहल की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है। जैविक कृषि, जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग, मौजूदा जलाशयों का कायाकल्प, वर्षा जल का संग्रहण, कागज रहित दस्तावेजों का प्रयोग इत्यादि भी हरित पहल के ही भाग हैं। हरित पहल के आशय केवल वृक्ष लगाने, भू–जल के स्तर को बढ़ाने तक ही सिमित नहीं है वरन ऐसे कार्यों से परहेज करना है जो किसी न किसी रूप में प्रकृति को क्षति पहुंचाते हैं या सार्वभौमिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करते हैं। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के रूप में हरित पहल की आवश्यकता तथा कारणों को शामिल कर भावी भविष्य को इसकी जानकारी दी जानी चाहिए।

समय व परिस्थिति को ध्यान में रखकर कार्य करना प्रासंगिक होता है अर्थात यह आवश्यक नहीं है कि जो उद्यम सौ वर्ष पूर्व प्रासंगिक थे, वर्तमान में भी प्रासंगिक होंगे। सत्तर के दशक में भारत में हरित क्रांति का उद्देश्य तत्कालीन आवश्यकताओं के मद्देनजर प्रासंगिक था लेकिन वर्तमान में उत्पादकता में वृद्धि केवल उन्हीं उत्पादों की होनी चाहिए जो पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित, आर्थिक रूप से व्यवहार्य तथा सामाजिक रूप से टिकाऊ हो।

प्रकृति किसी प्रयोगशाला जैसी है जिसमें छोटी–बड़ी सभी बीमारियों के लिए औषधियाँ किसी न किसी रूप में विद्यमान है। चाहे वह जल के रूप में हो, स्वच्छ वायु हो या फिर वनों के रूप में। हरित पहल वातावरण और मनुष्यों के लिए समान रूप से हितकारी है। कोई भी शासकीय पहल तभी सफल हो सकता है जब जनभागीदारी का प्रतिशत उसमें अधिकाधिक हो। हरित प्रदेश, समृद्ध प्रदेश की संकल्पना को आगे बढ़ाकर ही देश की समृद्धि संभव है। अर्थव्यवस्था के क्रमिक विकास में यह ध्यान देना नितांत आवश्यक है कि अर्थव्यवस्था में किए गए कार्य देश को आर्थिक रूप से उन्नत करने के साथ समृद्धि प्रदान करने वाले भी हो। समृद्धि का संबंध सुलभता और जीवन के संतुलित उपभोग से अधिक भावी पीढ़ियों के लिए स्थाई जीवन से है। हरित पहल के लिए सरकारी संस्थाओं के साथ–साथ उपक्रमों ने विगत वर्षों में सराहनीय प्रयास किए हैं। इन सब के परे सामान्य जन को भी निजी स्तर पर हरित पहल के लिए पहल करनी होगी। कुल मिलाकर प्रकृति को नष्ट करके या पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव किसी देश की समृद्धि तो बिल्कुल भी संभव नहीं है, हाँ यदि हरित पहल के साथ संतुलित विकास या प्रकृतिन्मुख विकास को बढ़ावा दिया जाए तो हम समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

महाप्रबंधक
प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली

कार्टून कोना

अलीमुद्दीन सिद्दीकी

बैंकिंग में ग्राहक सेवा के विविध आयाम

बैंकिंग उद्योग, भारतीय अर्थव्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक है। समष्टि अर्थशास्त्र के व्यापक आर्थिक पहलुओं के माध्यम से देश में आर्थिक तरक्की और विकास को प्रोत्साहित करने के अलावा, बैंकिंग उद्योग मुख्य रूप से एक सेवा क्षेत्र है जिसमें ग्राहक सर्वोपरि हैं। किसी भी सेवा क्षेत्र की तरह, बैंकिंग उद्योग भी मुख्य रूप से अपने ग्राहकों पर निर्भर करता है, चाहे वह ग्राहक कोई कॉर्पोरेट यूनिट हो या ग्रामीण क्षेत्र का कोई व्यक्ति। किसी भी अन्य ग्राहक–केंद्रित व्यवसाय मॉडल की तरह बैंकों को भी अपने ग्राहकों को बनाए रखने के लिए उन्हें गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान करनी होती है। बैंकिंग सेवाओं और संपूर्ण बैंकिंग उद्योग के महत्व को ध्यान में रखते हुए बैंक कर्मचारियों द्वारा अपने ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली सेवाएं भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए विस्तृत अर्थ में और भी महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

यदि हम ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली बैंकिंग सेवाओं की बात करें तो बैंक के कर्मचारी इस मामले में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवाएं तो प्रदान करनी ही होती है बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होता है कि वे अपने ग्राहकों की अपेक्षाओं/आवश्यकताओं को पूरा करें। ऐसा करने के लिए, बैंक कर्मचारियों को कोर कस्टमर सर्विस स्किल्स विकसित करने की आवश्यकता होती है जो उन्हें अपने ग्राहकों को सर्वोत्तम संभव तरीके से बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में मदद करती हैं। यहाँ हम उन महत्वपूर्ण कोर ग्राहक सेवा कौशल पर चर्चा करेंगे जो बैंक के कर्मचारियों में होनी चाहिए ताकि वे अपने ग्राहकों को निर्बाध और स्मरणीय बैंकिंग अनुभव प्रदान कर सकें।

ग्राहक–संवादः संवाद शायद किसी भी क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारी के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है और यह बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों के लिए भी सत्य है। अच्छे संवाद कौशल में सुनना और बोलना दोनों शामिल होती है। ग्राहक द्वारा किए गए प्रश्नों/समस्याओं को ध्यान से सुनना और समस्या का सबसे उपयुक्त समाधान

ढूंढना और अंत में अपने ग्राहक को इस समाधान को बताने/समझाने में सक्षम होना ही एक अच्छे संवाद कौशल को प्रदर्शित करता है। आपको अपने ग्राहक को हर तरीकें से संतुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। ग्राहक द्वारा पूछे गये हर प्रश्न का उत्तर या समाधान इस तरीके से देने की कोशिश करें जैसे आप किसी दूसरी कक्षा के छात्र को कोई महत्वपूर्ण बात समझा रहे हों। भारतीय बैंकिंग उद्योग जो बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सीईओ, किसानों और दैनिक मजदूरी करने वाले श्रमिकों से लेकर विभिन्न क्लाइंटों के साथ काम करता है, के लिए संवाद बहुत महत्वपूर्ण है। एक अच्छे बैंक कर्मचारी को ग्राहक के अनुसार अपनी कम्युनिकेशन तकनीकों को बदलने में सक्षम होना चाहिए तथा ग्राहक की समस्याओं को सरलतम तरीके से सुलझाने में और कम से कम समय–सीमा के भीतर सहायता प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए।

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा एक बड़ा राष्ट्रीय अपराध है। –स्वामी विवेकानंद

समवेदना: समवेदना की परिभाषा के अनुसार, समवेदना किसी दूसरे व्यक्ति की स्थिति को उनके परिप्रेक्ष्य से समझने का अनुभव है। बैंकिंग उद्योग के संदर्भ में, समवेदना का तात्पर्य अपने ग्राहकों की समस्याओं को तकनीकी व अन्य पहलुओं के साथ–साथ भावनात्मक पहलुओं को भी समझना है। कई विशेषज्ञों के मुताबिक, समवेदना किसी भी उद्योग में अच्छे ग्राहक सेवा संबंधों का आधार हैं। हालांकि, बैंकिंग क्षेत्र लोगों की वित्त व्यवस्था या योजना से संबंधित होता है, अतः इस क्षेत्र में लोगों की समस्याओं के प्रति समवेदना के साथ एक प्रभावी दृष्टिकोण होना और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। समवेदना दिखाकर आप ग्राहकों के साथ एक मजबूत निजी रिश्ता बना सकते है जोकि आपके बैंक द्वारा लागू की गई नीतियों और योजनाओं में ग्राहक का विश्वास बनाये रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

धैर्य: बैंक के कर्मचारियों को प्रतिदिन कई प्रकार के ग्राहकों से डील करना होता है, जिसमे से कुछ शिक्षित होते है और बैंक की नीतियों से अवगत हो सकते हैं परंतु कुछ अशिक्षित होते है और बैंकिग नियमों से परिचित नहीं होते है। एक बैंक कर्मचारी के रूप में आपको अपने ग्राहकों को उनके स्वभाव, शैक्षणिक या वित्तीय पृष्ठभूमि का विचार किए बिना खुशी से सहायता और सेवा करने में सक्षम होना चाहिए। भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की सबसे बड़ी ताकत इसकी भेदभावहीन प्रकृति रही है जो अपने सभी ग्राहकों को समान रूप से मानती है और उन सभी को गुणवत्ता सेवाएं प्रदान करती है। बैंक के कर्मचारियों को उत्कृष्ट आत्म–नियंत्रित और संयमित होना चाहिए और अपने ग्राहकों को महत्वपूर्ण नियमों और जटिल बैंकिंग नीतियों को धैर्यपूर्वक समझाना चाहिए। इस प्रकार बैंक के कर्मचारियों में धैर्य का होना अत्यंत आवश्यक है।

विश्वास: एक अन्य महत्वपूर्ण ग्राहक सेवा कौशल जो सभी बैंक कर्मचारियों को विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए वह है आत्मविश्वास। सभी बैंक कर्मचारियों को आत्मविश्वासी और अपने क्षेत्र का पूर्ण जानकार होना चाहिए। इससे उनके ग्राहक मेहनत से अर्जित किये गये धन को लेकर बैंक पर भरोसा कर पाएंगे। बैंक के कर्मचारियों को अपने सभी कार्यों जैसे ग्राहकों के प्रश्नों का जवाब देना, उन्हें नए उत्पादों के बारे में बताना या पिच करना या एक किसी समस्या को सुलझाना इत्यादि में कुशल होना चाहिए। अपने ग्राहकों की समस्याओं को यथासंभव न्यूनतम समय में सबसे अच्छे तरीके से सुलझाना आपके ग्राहकों के बीच आपके साथ–साथ आपके बैंक की भी एक अच्छी छवि बनाएगा।

विस्मय को संभालने की योग्यता: बैंकिंग क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे विविध उद्योगों में से एक है। दूर–दराज के क्षेत्रों में फैली हुई बैंकिंग शाखाएं, विविध ग्राहकों, विभिन्न नियमों और नीतियों का लगातार विस्तार इस उद्योग को और भी अधिक चुनौतीपूर्ण बनाता है। इन मिश्रित कारकों का संयोजन समय–समय पर बैंक कर्मचारियों के सामने कई आश्चर्य और चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए बैंकिंग नीतियों के संबंध में केंद्रीय बैंक की एक नई नीति बैंको के पूरे ढांचे को बुनियादी रूप से बदल सकती है। ऐसे समय में बैंक कर्मचारियों को कुछ आश्चर्यजनक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

उपरोक्त वर्णित गुण बैंक कर्मचारियों द्वारा उनके कर्तव्यों को सर्वोत्तम तरीके से निर्वहन करने के लिए उच्च ग्राहक–सेवा कौशल हैं। इनके अलावा, कई अन्य संबंधित गुण जैसे स्वप्रेरणा, लक्ष्य–उन्मुख फोकस, संघर्ष समाधान तकनीक, समय–प्रबंधन जो बैंक कर्मचारियों को अपने व्यक्तित्व के अभिन्न अंगों के रूप में विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान में लगभग प्रत्येक व्यक्ति प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बैंक की सेवाएं लेता है। चाहे किसान हों या व्यापारी, नौकरी पेशा हो या सेवानिवृत्त कर्मचारी, विद्यार्थी हो या फिर अध्यापक किसी न किसी रूप में सभी बैंक की सेवाएं प्राप्त करते हैं। बैंकिंग संस्थान ग्राहकों की आवश्यकताओं एवं उपलब्धता के आधार पर अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं। अपने द्वारा उपलब्ध करायी गई सेवाओं के बदले, बैंक ग्राहकों से कुछ शुल्क लेते हैं। यह शुल्क अलग–अलग बैंकों द्वारा ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं के लिए भिन्न–भिन्न हो सकती है।

आज खुली अर्थव्यवस्था के युग में सार्वजनिक बैंकों के साथ ही निजी बैंकों का तीव्र गति से विस्तार हो रहा है। प्रत्येक बैंकिंग संस्थान दूसरे संस्थानों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है। ऐसे में ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए विज्ञापनों का सहारा लिया जा रहा है। इन विज्ञापनों के माध्यम से एक से बढ़कर एक दावे किये जाते हैं लेकिन कई बार यह दावे गलत साबित होते हैं और उपभोक्ता ठगा सा महसूस करता है। ऐसे में वह न्याय पाने के लिए इधर–उधर भटकने को विवश होता है। इसका प्रमुख कारण उपभोक्ताओं में जागरूकता की कमी हैं। अतः ग्राहकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए तथा किसी भी बैंकिग संस्थान के साथ संव्यवहार करते समय सचेत रहते हुए नियम एवं शर्तो को अच्छी तरह से पढ़–समझ कर ही किसी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करना चाहिए।

भारतीय रिजर्व बैंक, ग्राहकों/उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा के लिए समय–समय पर बैंकों/वित्तीय संस्थानों को दिशा–निर्देश जारी करता रहता है जिसका अनुपालन करना सभी बैंकों/वित्तीय संस्थानों के लिए आवश्यक है। भारतीय रिजर्व बैंक केवल दिशा–निर्देश ही नहीं जारी करता बल्कि बैकों/वित्तीय संस्थानों के क्रियाकलापों की समय–समय पर समीक्षा एवं निगरानी भी करता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा स्थापित भारतीय बैंकिंग कोड एवं मानक बोर्ड ने बैंकों के लिए कुछ स्वैच्छिक आचार संहिता निर्धारित किए हैं। यह स्वैच्छिक आचार संहिता अलग–अलग ग्राहकों के साथ बैंकों द्वारा संव्यवहार करते समय न्यूनतम मानक निर्धारित करते हैं।

भारतीय बैंकिंग कोड एवं मानक बोर्ड द्वारा तैयार किए गए इन स्वैच्छिक आचार संहिताओं का विशेष उद्देश्य है। एक जागरूक ग्राहक/उपभोक्ता को इन आचार संहिताओं की जानकारी रखनी चाहिए ताकि बैंक/वित्तीय संस्थान के साथ संव्यवहार करते समय उनके हितों की सुरक्षा हो सके। **स्वैच्छिक आचार संहिता का ध्येय इस प्रकार हैः ग्राहकों को सुरक्षा प्रदान करना, ग्राहकों के साथ बैंकों के संव्यवहार के न्यूनतम मानक का निर्धारण करना, अच्छी व निष्पक्ष बैंकिंग प्रथाओं को बढ़ावा देना, बैंकों के काम-काज में पारदर्शिता लाना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माध्यम से बाजार को शक्तिशाली बनाना, ग्राहकों एवं बैंकों के बीच निष्पक्ष एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण कायम करना, बैंकिंग प्रणाली में लोगों का विश्वास बढ़ाना।**

बैंक का यह दायित्व हैं कि जब वह किसी ग्राहक का खाता खोलता है और उसे ऋण प्रदान करता तो वह किन परिस्थियों में ग्राहक के खाते का विवरण ऋण संदर्भ एजेंसियों को देगा, इसकी जानकारी ऋण देते समय ग्राहक को प्रदान किया जाना चाहिए। निम्नलिखित परिस्थितियों में बैंक ऐसा कर सकता हैः

- जब ग्राहक ने ऋण अदायगी न की हो।
- बैंक की औपचारिक मांग के बाद, ऋण की चुकौती के बारे में बैंक, ग्राहक के प्रस्तावों से संतुष्ट न हो।
- ऐसे मामलों में बैंक द्वारा ग्राहक को लिखित सूचना दी जानी चाहिए।

जब भी बैंक किसी ग्राहक को ऋण देता है तो उसे चुकौती की राशि तथा उस पर लगने वाले ब्याज आदि के बारे में पूरी जानकारी दी जानी चाहिए। यदि ग्राहक, बैंक द्वारा ऋण ली गयी राशि की चुकौती नहीं करता है तो बैंक को यह अधिकार है कि वह राशि की वसूली के लिए देश के कानूनों के मुताबिक कार्रवाई करे। इस प्रणाली में नोटिस भेजकर या व्यक्तिगत रूप से मिलकर या यदि कोई प्रतिभूति है तो उस पर अधिपत्य करना शामिल है लेकिन बैंक, ग्राहक के साथ किसी प्रकार की जोर–जबरदस्ती नहीं कर सकता।

बैंक की समाहरण नीति को शिष्टाचार, उचित व्यवहार और समझाने–बुझाने पर आधारित होनी चाहिए। बैंक का कोई भी स्टाफ या कोई व्यक्ति जिसे राशि के समाहरण या प्रतिभूति के पुनः अधिकार का प्रतिनिधित्व दिया गया है। वह यदि ग्राहक के पास जाता है तो पहले वह स्वयं की पहचान बताएगा तथा बैंक द्वारा जारी किया गया अधिकार पत्र दिखाएगा। समाहरण या प्रतिभूति के पुनः अधिकार के लिए बैंक द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति या स्टाफ के लिए निम्नलिखित दिशा–निर्देशों का पालन अनिवार्य हैः

- सामान्यतः ग्राहक के पसंद के स्थान पर और यदि कोई विशेष स्थान नहीं है तो ग्राहक के आवास पर और यदि वह वहाँ उपलब्ध नहीं है तो कारोबार के स्थान पर संपर्क करेगा।
- पहचान व प्रतिनिधित्व करने के अधिकार के बारे में ग्राहक को तुरंत बताएगा।
- ग्राहक के निजता का सम्मान करेगा।
- ग्राहक से वार्तालाप करते समय शिष्टाचार के नियमों का पालन करेगा।
- सामान्यतः बैंक के प्रतिनिधि को सुबह 7 बजे से सायं 7 बजे के बीच ग्राहक से संपर्क करना चाहिए, जब तक की ग्राहक के कारोबार की विशेष परिस्थितियों के कारण कोई अन्य समय की जरूरत न हो।
- एक विशेष समय या किसी विशेष स्थान पर कॉल न करने के ग्राहक के अनुरोध का यथासंभव आदर करना चाहिए।
- देय राशि संबंधी विवाद या मतभेदों को आपस में स्वीकार्य तथा विधिवत रूप से निपटाने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए।
- अनुचित अवसरों जैसे परिवार में शोक या अन्य किसी विपदा के समय कॉल करने तथा ग्राहक के पास जाने से बचा जाना चाहिए।

बैंकिंग लोकपाल योजना, 2006: बैंक के ग्राहकों एवं उपभोक्ताओं के परिवादों के निवारण के लिए बैंकिग लोकपाल योजना लागू की

गई है। यह योजना भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 1 जनवरी, 2006 से पूरे देश में लागू है। लगभग सभी राज्यों की राजधानी में इसके कार्यालय हैं जहाँ भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से नियुक्त अधिकारी ग्राहकों की समस्याएं सुनते हैं तथा उसका समाधान करते हैं। सभी बैंकों की वेबसाइट पर अथवा बैंकों की शाखाओं में अनुरोध करके नाममात्र के प्रभार पर भारतीय रिजर्व बैंक की बैंकिंग लोकपाल योजना की एक प्रति प्राप्त की जा सकती है। इनके कार्यालयों के पते बैंक में नियुक्त नोडल अधिकारी से प्राप्त किया जा सकता है। इस योजना के अधीन सभी वाणिज्यिक, क्षेत्रीय ग्रामीण तथा को–ऑपरेटिव बैंक आते हैं।

बैंक, ग्राहक सेवा पर अधिक ध्यान दें : आरबीआई

बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहक–सेवा के स्तर में सुधार करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने एक समिति बनाने का फैसला लिया है जो खुदरा और छोटे ग्राहकों के साथ पेंशनर को दी जाने वाली बैंकिंग सेवा पर नजर रखेगी। इसके अलावा यह शिकायतों के बेहतर समाधान के उपाय भी सुझाएगी और अंतरराष्ट्रीय अनुभवों का परीक्षण भी करेगी। आरबीआई का कहना है कि इसे कुछ लोन और अग्रिम पर ज्यादा ब्याज–दर लगाए जाने की शिकायतें मिल रही हैं। आरबीआई का कहना है, **''बैंक के ग्राहकों के साथ बेहतर बरताव जरूरी है। अब तक अनुभव यही है कि ग्राहकों के पक्ष को पूरी गंभीरता से नहीं रखा जाता। बैंकिंग क्षेत्र में ग्राहकों की सेवा का मसला बेहद महत्वपूर्ण बन रहा है क्योंकि यह सार्वजनिक हितों को पूरा करने वाला एक महत्वपूर्ण संस्थान है।''**

बैंक ग्राहकों को जिस तरह की सेवाएं मुहैया कराना चाहते हैं, वे इसे अपनी पसंद के हिसाब से इनका चयन कर सकते हैं। आरबीआई का कहना है कि ग्राहकों की शिकायतों के मद्देनजर एक प्रभावी और विश्वसनीय व्यवस्था बनाने की जरूरत है। यह समिति ग्राहकों की सेवा से जुड़े आरबीआई के दिशानिर्देशों पर अमल करने के लिए इस व्यवस्था को मजबूत करने की कोशिश करेगी। बैंकों को यह कहा गया है कि वे हर 6 महीने में एक बार बोर्ड की बैठक में अपना समय दें और ग्राहक–सेवा की समीक्षा करें। केंद्रीय बैंक, आरबीआई ने बैंकों को कहा है कि वे अपने आंतरिक संरचना को बढ़ाने की कोशिश करें ताकि पेंशनरों और छोटे कर्जदारों जिनमें किसान शामिल हैं, उनकी विशेष जरूरतों को पूरा किया जा सके।

आरबीआई ने पिछले कुछ वर्षों में कई तरह की पहल की है मसलन रिकवरी एजेंट पर नियंत्रण करना, डिसप्ले बोर्ड लगाना, दिव्यांगों के लिए बैंकिंग सुविधाएं मुहैया कराना, बाहर के चेकों के कलेक्शन में तार्किक सेवा–शुल्क लगाना और एटीएम का निःशुल्क इस्तेमाल सुनिश्चित कराना ताकि ग्राहकों में कोई भेदभाव हो।

ग्राहक सहायता मुख्यतः ग्राहक सेवा के नाम से जाना जाता है। इसमें बैंक कर्मी किसी ग्राहक को उनके लिए सही उत्पाद का सही तरह से उपयोग करने आदि के बारे में बताते हैं। इसमें उसकी योजना, स्थापित करना, लाभ, परेशानी के बारे में और उसे ठीक करना आदि के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। कई बार इसमें ग्राहक के पास जा कर भी उसकी सहायता की जाती है। बैंकिंग में ग्राहक सेवा का बहुत महत्व है। जब भी ग्राहक बैंक में प्रवेश करता है वह आशा लेकर आता है कि उसे उसके कार्य के अनुरूप पूरी सहायता मिलेगी। बैंकों में हर वर्ग, आयु, योग्यता का व्यक्ति आता है। हमें उसको उसी तरह का महत्व देना है। हर बैंक कर्मी का यह प्रयास रहना चाहिए कि ग्राहक उसकी दी हुई सेवा से पूर्णतया संतुष्ट हो। ग्राहक संतुष्टि ,बैंक कर्मी का ध्येय होना चाहिए।

अलीगढ़ शाखा, गुरुग्राम अंचल

रचनाकारों से निवेदन

रचनाकारों से निवेदन है कि बैंक के प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही हिंदी गृह–पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु लेख भेजते समय लेख के अंत में अपना नाम, शाखा/कार्यालय का नाम व पता, मोबाइल नंबर तथा अपना बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड अवश्य लिखें। इसके साथ ही लेख के संबंध में मौलिकता प्रमाण–पत्र और अपना फोटो भी उपलब्ध कराएं। सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा स्थायी खाता संख्या (पैन नंबर) का भी उल्लेख करें।

–मुख्य संपादक

बैंक में हिंदी/पंजाबी कार्यशाला का आयोजन

एसटीसी रोहिणी, नई दिल्ली

अंचल कार्यालय गुरुग्राम

अंचल कार्यालय नोएडा

अंचल कार्यालय जयपुर

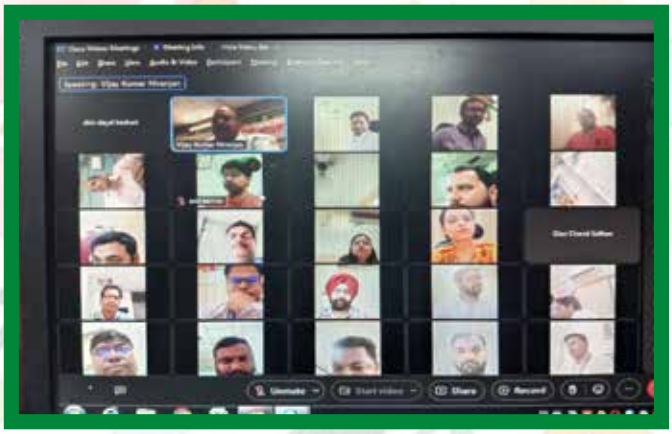

अंचल कार्यालय बरेली

अंचल कार्यालय भोपाल

शिक्षा और प्रशिक्षण का एकमात्र उद्देश्य समस्या समाधान होना चाहिए। – जार्ज बर्नार्ड शाह

बैंक में हिंदी/पंजाबी कार्यशाला का आयोजन

अंचल कार्यालय फरीदकोट

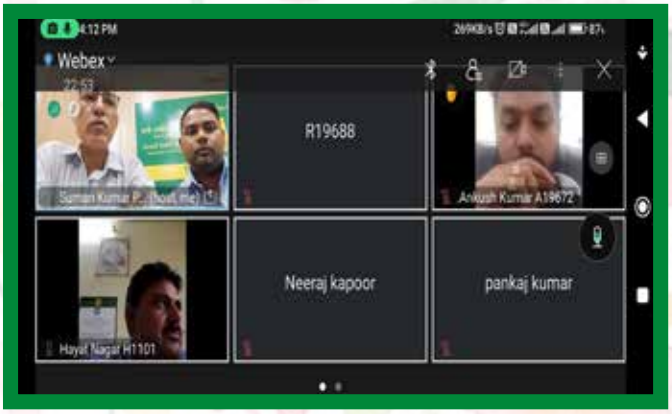

अंचल कार्यालय गुरदासपुर

अंचल कार्यालय होशियारपुर

सहभागी

सतर्कता जागरूकता कार्यशाला

20 मई, 2022 को अंचल कार्यालय मुंबई में सतर्कता जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री भगवान चौधरी, सहायक महाप्रबंधक मुंबई के द्वारा की गई। कार्यशाला में मुख्य वक्ता व मुख्य अतिथि के रूप में बैंक के मुख्य सर्तकता अधिकारी श्री अम्बरीष कुमार मिश्रा आमंत्रित थे। श्री अम्बरीष कुमार मिश्रा जी ने बैंक में सतर्कता विभाग की प्रासंगिकता, कार्यप्रणाली तथा सर्तकता से संबंधित दिशानिर्देशों के अनुपालन की अनिवार्यता के संबंध में सहभागियों को जानकारी दी। बैंक के मुंबई स्थित शाखाओं के प्रभारी तथा अंचल कार्यालय मुंबई के अधिकारियों ने कार्यशाला में सहभागिता की।

यशोदा मुर्मू

मानस पटल में अंकित अविस्मरणीय दिन (संस्मरण)

प्रत्येक दिन की तरह दिनांक 21.04.2022 की शाम, कार्य पूर्ण कर घर में ई–मेल देख रही थी। अनायास ही साहित्य अकादमी की ओर से प्रेषित संदेश दिखा जिसे पढ़कर मन खुशी से सराबोर हो गया। परिवारजनों को भी बताया।

संदेश का एक अंश था **''संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और साहित्य अकादमी की ओर से शिमला में 16 से 18 जून 2022 तक, आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव का आयोजन हो रहा है जिसमें देश-विदेश से 450 के करीब वक्ता, लेखक और विद्वान आमंत्रित हैं''।** संदेश एक निमंत्रण–पत्र के साथ–साथ एक अनुरोध भी था जिसमें मुझे हिंदी में 8 मिनट के करीब एक लघु कथा का वर्णन करना था। यह वाकई में एक गौरवान्वित करने वाला क्षण था लेकिन अब कहानी के विषय के उधेड़बुन में मैं फंस गई और विषय की असमंजसता में 1 सप्ताह यूं ही बीत गए।

मई का महीना आरंभ हुआ। अपने शुभचिंतकों और पूर्वजों का ध्यान कर मैंने गहन चिंतन किया और इस निष्कर्ष में पहुंची कि मैं अपने आदिवासी समाज पर सत्य घटनाओं से प्रेरित कहानी लिखूंगी जो सामाजिक वास्तविकता का प्रतिबिंब होगा। आदिवासी समाज में विस्थापन की कड़वी सच्चाई को सोचकर मैंने उसके इर्द–गिर्द कहानी बुनी और जब कहानी लिखकर तैयार हो गई तो मैंने अपने कल्पना को जीवंत होते देखा। कागज के पन्नों ने वाकई में व्यथा को काफी सही तरह से चरितार्थ किया। विषय था ''परछाई सम पीछा कर रहा'' जो एक दादी और पोते की वार्तालाप में तीन विभिन्न परिस्थितियों और घटनाओं पर आधारित कहानी थी।

साहित्य अकादमी, समय–समय पर कार्यक्रम का विस्तार से विवरण उपलब्ध कराते रहे जिसके अनुसार 15 जून, 2022 को शिमला के लिए हमें रवाना होना था। खानपान आदि का बंदोबस्त उनकी ओर से ही था। गंतव्य स्थल पर हम अपने समयानुसार पहुंच गए, साहित्योत्सव आरंभ हुआ और सभी आमंत्रित लेखकों ने विभिन्न विषय पर लघु कथा का पाठ किया। कहानी के साथ–साथ कविता पाठ, परिचर्चा, आलेख प्रस्तुति और अन्य कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। दुनिया के विभिन्न भागों से आए हुए लेखकों और विद्वानों से मिलकर विचारों का आदान–प्रदान करने का और बहुत कुछ सीखने का सुनहरा अवसर मिला।

शीर्ष पदों पर बैठे हुए वरिष्ठ पदाधिकारियों और विशेषज्ञों ने मेरे द्वारा लिखित कहानी को सुना और मेरा उत्साहवर्धन किया। उनके आशीर्वचन और प्रोत्साहित करने वाले शब्दों से मेरा मन काफी प्रफुल्लित हुआ। इसके अतिरिक्त आदिवासी समाज पर कहानी के माध्यम से समकालीन और घटित प्रताड़ना की घटनाओं को सबके समक्ष रखने की संतुष्टि भी हुई। हर्षोल्लास के साथ यह तीन

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है परंतु एक नया वातावरण देना भी है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

दिवसीय अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव संपन्न हुआ। वाकई में, यह मेरे जीवन के अविस्मरणीय और सफलतम दिनों में से थे जो मेरे मानस पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ गए।

मैं सहृदय धन्यवाद करती हूं – संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश एवं साहित्य अकादमी के सभी कर्मचारियों का जिन्होंने इतने बड़े स्तर पर ना केवल सुनियोजित ढंग से कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया बल्कि अथक परिश्रम से यह निश्चित किया कि किसी भी आए हुए अतिथि को कोई शिकायत का मौका ना मिले। अंततः कला के संगम में ओतप्रोत हो मैं यह आशा करती हूं कि शीघ्र ही इस प्रकार के आयोजन पुनः हो।

सुश्री यशोदा मुर्मू, हमारे बैंक की शाखा कमला नगर, अंचल कार्यालय दिल्ली–II में प्रबंधक के पद पर पदस्थ हैं। लघु कथा और कविता लेखन में गहन रुचि होने के साथ–साथ ही इन्हे अपनी मातृभाषा संथाली के प्रति विशेष लगाव है। सुश्री मुर्मू संथाली लेखक संघ, भारत की सह–संस्थापक सदस्य हैं। आप आकाशवाणी कोलकाता तथा दूरदर्शन कोलकाता से जुड़ी हुई हैं। सुश्री यशोदा मुर्मू, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के संथाली सलाहकार बोर्ड तथा पश्चिम बंगा संथाली अकादमी की सदस्य रह चुकी हैं। संथाली भाषा में इनकी कुल 6 किताबें प्रकाशित हो चुकी है तथा इन्होंने श्री विनोद कुमार शुक्ल की उपन्यास "दीवार में एक खिड़की रहती थी" का संथाली भाषा में अनुवाद किया है।

शाखा – कमला नगर, दिल्ली

जरा सोचिए...?

नीरज चेतवानी

छुट्टी के दिन घर के कुछ आवश्यक कार्य करने होते हैं। इसी क्रम में मेरी भी आदत है कि महिने–दो महिने में एक बार अपनी मोटर–साइकिल की सर्विसिंग करा लेता हूँ। इस बार मैं अपनी दुपहिया की सर्विसिंग के लिए पास के ही दुकान पर गया। दुकान छोटी सी ही थी, दुकान में गाड़ियों के स्पेयर्स पार्ट्स रखे हुए थे और दुकान के सामने सड़क के दूसरी ओर फुटपाथ पर गाड़ियों की सर्विसिंग की जा रही थी। फुटपाथ पर काम होने के बावजूद उसके पास ग्राहकों की बड़ी संख्या मौजूद थी। ग्राहक अपनी–अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे।

गैरेज में बहुत सारे मैकेनिक गाड़ी ठीक करने में लगे हुए थे लेकिन गैरेज का मालिक सभी गाड़ियों को पहले स्वंय चेक करता फिर किसी मैकेनिक को गाड़ी ठीक करने के लिए देता। मैंने भी गैरेज के मालिक को अपनी मोटर साइकिल की सर्विसिंग के लिए कहा। गैरेज मालिक ने मेरी दुपहिया चेक की फिर उसके सर्विसिंग में आने वाली लागत बताई। गाड़ी की सर्विसिंग होने तक मैं वहीं इंतजार करता रहा, इसमें लगभग दो घंटे लग गए। सर्विसिंग के बाद मुझे बिल थमाया गया। बिल में डिस्काउंट के लिए मैंने गैरेज मालिक से मोलभाव किया। गैरेज मालिक ने मुझसे कहा कि "हम बिल में कोई डिस्काउंट नहीं करते लेकिन आप इतना अनुरोध कर रहे हैं तो थोड़े कम दे दिजिए, आपकी भी बात रह जाएगी और मेरा नुकसान भी नहीं होगा। यदि मैं आपको संतुष्ट नहीं कर पाया तो मेरे इस दुकान क्या मतलब।" केवल मेरी बात रखने के लिए और मेरी संतुष्टि के लिए दुकानदार ने बिल में डिस्काउंट किया जो नाममात्र का था। दुकानदार ने ज्यादा पैसे कम नहीं किए लेकिन ग्राहक–संतुष्टि पर ध्यान बनाए रखा। जरा सोचिए इसी प्रकार हम बैंक के ग्राहकों को दूसरे बैंकों के बराबर सभी सुविधाएं नहीं दे सकते हैं लेकिन उनकी संतुष्टि का ख्याल जरूर रख सकते हैं। यह केवल बैंक के लिए नहीं वरन् हमारे व्यक्तिगत जीवन के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकता है। मैंने तो इस विषय पर थोड़ा सा चिंतन किया है। अब सोचने की बारी आपकी है, जरा सोचिए.....!

प्रधान कार्यालय मानव संसाधन विकास विभाग

मंजीत सिंह मल्होत्रा

बैंकों में राजभाषा हिंदी की उपयोगिता एवं महत्व

भारतवर्ष यद्यपि ''अनेकता में एकता'' वाला देश है तथापि इस देश में भाषा को लेकर जितने आंदोलन हुए है, उतने दुनिया के किसी देश में नहीं हुए लेकिन भारत सरकार ने इस स्थिति का सामना बड़ी बुद्धिमता एवं दूरदर्शिता के साथ किया और राष्ट्र को हिंदी भाषा समर्पित की। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो सारे देश को एक सूत्र में पिरो सकती है और इसलिए हिंदी भाषा को देश की अन्य भाषाओं की तुलना में उपयुक्त स्थान दिया गया है तथा साथ ही साथ संविधान में इसको राजभाषा का स्थान दिया गया है।

केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की अपेक्षा बैंकों में हिंदी का प्रयोग अधिक हो रहा है। समय–समय पर हिंदी के प्रभाव एवं प्रयोग में वृद्धि करने के लिए बैंकों में कई आदेश जारी किए जाते हैं लेकिन अंग्रेजी में कार्य करने के अभयस्त कर्मचारियों द्वारा हिंदी की उपयोगिता की अवहेलना की जाती रही है। हिंदी का प्रयोग बैंकों की कार्य–प्रणाली में अभी तक उतना प्रभाव नही छोड़ पाया है, जैसा कि अपेक्षा की जाती रही है। इसके कुछ कारण हैं जैसे अधिकांश बैंक कार्मिक पुरानी नियुक्ति होने के कारण अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रयोग करते हैं क्योंकि बैंकों से संबंधित हिंदी शब्दावली का चलन बाद में हुआ और बैंकों के कर्मचारी अंग्रेजी में कार्य करने के अभयस्त होने के कारण हिंदी में कार्य करने में कठिनाइयों का अनुभव करते हैं तथा इसके साथ–साथ कुछ कर्मचारी अंग्रेजी मे कार्य करने में गर्व महसूस करते हैं और साथ ही साथ हिंदी में कार्य करने वालों की आलोचना भी करते रहते हैं जिससे उन कर्मचारियों में अपनी ही भाषा के प्रति हीनभावना जाग्रत हो जाती है जोकि नहीं होनी चाहिए।

प्रायः यह देखा गया है कि बैंकों के कर्मचारी हिंदी में कार्य करने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं। यदि सही अर्थों में इस झिझक को दूर करना है तो इसका सरल उपाय यह है कि जब कभी हिंदी का प्रयोग करने पर या किसी से पत्राचार करने पर किसी अंग्रेजी शब्द का हिंदी में शब्द ज्ञात नही हो पा रहा हो तो उस

शब्द को देवनागरी लिपि में जस का तस लिख देना चाहिए। हमें पत्राचार करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि उक्त पत्र की भाषा सरल तथा सुबोध होनी चाहिए जिससे पत्र लिखने वाले का आशय उस पत्र को पढ़ने वाला सही प्रकार से समझ सके। ऐसी कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं जो हिंदी के लिए अभिशाप बन कर खड़ी हो गई हैं।

व्यवसायिक दृष्टि से भी हिंदी भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। देश में ऐसा कोई प्रदेश नहीं हैं जहाँ हिंदी भाषा के प्रयोग के बिना कोई व्यापार होता हो। इसमें कोई शक नहीं कि बैंकों में हिंदी का चलन पहले से अधिक हो गया है फिर भी नव–नियुक्त अधिकारियों/कर्मचारियों को यह सलाह दी जाती है कि हिंदी में कार्य करते समय बिल्कुल भी हिचकिचाहट न महसूस करें। यद्यपि न्यायिक, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा बैंकों से संबंधित शब्दकोश बन चुके हैं और अत्यधिक प्रचलित भी हो चुके है तो आपको उनकी सहायता लेनी चाहिए। फिर भी यदि अंग्रेजी के किसी शब्द का अर्थ समझ में नहीं आ रहा हो तो उसको देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिख देना चाहिए। बैंकों में हिंदी की उपयोगिता की निरंतर बढ़ोतरी हेतु अनुदित हिंदी के स्थान पर

अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है। – मदन मोहन मालवीय

मूलतः साधारण आम बोलचाल की हिंदी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग, राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को जन–जन तक पहुँचा सकता है। हमें इस पर गर्व करना चाहिए और प्रण करना चाहिए कि हम सभी अपने–अपने बैंकों में हिंदी में अधिकाधिक कार्य कर, इसकी उपयोगिता को सिद्ध करेंगे।

सितंबर माह के आरंभ होते ही बैंक के हिंदी अधिकारियों के सिर पर 'हिंदी दिवस', 'हिंदी पखवाड़ा' तथा 'हिंदी माह' के आयोजन करने की चिंता सवार हो जाती है। हिंदी दिवस की औपचारिकताओं को ध्यान में रखते हुए, अंग्रेजी में लिखी गई टिप्पणियों, प्रारूपों आदि पर आपत्ति की जाने लगती है। इन दिनों में हमें यह महसूस होने लगता है कि हिंदी हमारी राजभाषा है। यदि वास्तविकता में अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति झिझक दूर करनी है तो पूरे वर्ष राजभाषा अधिकारियों द्वारा शाखाओं में अलग–अलग कार्यशालाएं करनी चाहिए तथा नियमित रूप से संबंधित शाखाओं से जुड़कर अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के प्रयोग करने में जो कठिनाइयां आती हैं, उनका निवारण करना चाहिए और जो अधिकारी कर्मचारी हिंदी का अपने कार्यों में अधिक प्रयोग करे, उनको प्रोत्साहित करना चाहिए।

सरकारी कार्यालयों के साथ–साथ बैंकों में हिंदी का प्रगामी प्रयोग एवं महत्व निरंतर बढ़ रहा है। समय–समय पर हिंदी की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए कार्यालय आदेश जारी किए जाते हैं तथा अंग्रेजी में अभ्यस्त अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। यह प्रक्रिया अविरल गति से तब तक चलती रहेगी जब तक अंग्रेजी में अभ्यस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी का महत्व समझ में न आ जाए।

स्वतंत्रता के 74 वर्ष के अंतराल तक हमने लोकतांत्रिक व्यवस्था अपनाई हुई है और यह व्यवस्था आगे भी चलती रहेगी। ऐसी स्थिति में राजभाषा के महत्व की अनदेखी नहीं करनी चाहिए और यदि बैंकों में हिंदी के प्रयोग में किसी प्रकार की अड़चने आती हैं तो उन्हे तुरंत दूर करना चाहिए। इस अवसर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन दिए जाने चाहिए। कभी–कभी ऐसा महसूस किया जाता है कि हिंदी एक अक्षम भाषा है परन्तु ऐसा कदापि नही है। यह अक्षमता हिंदी भाषा की नहीं हैं अपितु इसके प्रयोग करने वालों की अक्षमता है। जहाँ तक अंग्रेजी का हिंदी से तुलनात्मक विश्लेषण किया जाता है तो हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषा का साम्राज्य दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है और वह दिन दूर नहीं जब हिंदी भाषा का जादू बैंकों एवं अन्य प्रतिष्ठानों के सिर पर चढ़कर बोलेगा। अंग्रेजी भाषा का प्रचलन इस मुहावरे में निहित हो गया है कि "आडम्बर अधिक तत्व कम"। बैंकों में कार्यरत अधिकारियों/कर्मचारियों की धारणा बदलती जा रही है और वे हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कर, हिंदी भाषा को अधिक प्रभावी बना रहे हैं। आशा है कि यदि यह प्रयत्न इसी प्रकार चलता रहा तो यह दिन दूर नहीं जब हिंदी का वर्चस्व स्वयं में परिलक्षित होने लगेगा।

जब हिंदी का एकछत्र राज होगा तो आने वाले समय में स्वयं ही पता चल जाएगा कि हिंदी भाषा देश में फल–फूल रही है। सरकारी कार्यालयों, बैंकों और बीमा कंपनियों के कामकाज में हिंदी भाषा का प्रयोग पहले से अधिक होने लगा है। उक्त कार्यालयों में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्तियाँ लगातार की जा रही हैं। उनका यह कर्तव्य बनता है कि बैंकों आदि में हिंदी में कार्य करने में जो समस्याएं उत्पन्न होती हैं, उनका निवारण त्वरित गति से किया जाए। इसके साथ–साथ हिंदी में कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहित करना भी संस्थाओं का दायित्व है। यदि अंग्रेजी का वर्चस्व बिल्कुल समाप्त करना है तो अधिक से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने की पहल करनी होगी।

प्रायः देखने में आता है कि बैंकों एवं अन्य संस्थाओं में अंग्रेजी भाषा को अधिक महत्व दिया जा रहा है। अंग्रेजी का प्रयोग करना गलत नहीं है लेकिन यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसके कारण हिंदी का महत्व कम न हो और इसे अछूत न समझा जाए।

अतः हम कह सकते है कि हिंदी हमारा गौरव है और हमारे देश की पहचान है। हिंदी, भक्ति, प्रेम, एवं सद्भावना की भाषा है और राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। यदि हम इसी प्रकार बैंकों में इसके प्रचार–प्रसार में प्रयासरत रहेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी भाषा का बैंकों में वर्चस्व कायम होगा और अन्य भाषाओं की सिरमौर बन कर राज करेगी। इसकी महता को समझते हुए, प्रत्येक बैंक अधिकारी/कर्मचारी को प्रण कर लेना चाहिए कि वह अपने द्वारा किए पत्राचार और जन–प्रशासन के कार्यों में हिंदी भाषा का बेझिझक प्रयोग करेंगे जिससे आने वाले कल के लिए बैंकों में प्रयोग में आने वाली पीढ़ी के लिए एक ही भाषा "हिंदी" होगी।

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

ग्राहक सेवा का 115वाँ वर्ष– प्रधान कार्यालय

पंजाब एण्ड सिंध बैंक ने 24 जून, 2022 को अपना 115वाँ स्थापना दिवस मनाया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर बैंक के प्रधान कार्यालय ने गुरूद्वारा बंगला साहिब में 'अखंड पाठ' का आयोजन किया। ध्यातव्य है कि बैंक की स्थापना 1908 में अमृतसर में हुई थी और बैंक ने स्वतंत्रता से पहले तथा स्वतंत्रता के पश्चात बैंकिंग परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस अवसर पर माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने बैंक से जुड़े रहने के लिए सभी ग्राहकों, शेयरधारकों और शुभचिंतकों का उनके निरंतर संरक्षण के लिए बैंक की ओर से आभार व्यक्त किया। 115वें स्थापना दिवस पर स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज रोहिणी, दिल्ली में आयोजित समारोह में बैंक ने कतिपय प्रतिष्ठित ग्राहकों को सम्मानित किया गया।

सुंदर वही हो सकता है जो कल्याणकारी हो। – भगवतीचरण वर्मा

में स्थापना दिवस समारोह 2022

दलीप कुमार वैद

ग्राहक के मुख से

मैं पंजाब एण्ड सिंध बैंक का पुराना ग्राहक रहा हूँ। इस बैंक से मुझे एक अलग ही लगाव है, जिसके संबंध में यह कहना उचित होगा कि बैंकिंग संस्थान हम आम आदमी की जिंदगी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमारे परिवार के सभी सदस्यों का खाता इस बैंक में खोला गया है। आजकल तो डिजिटलीकरण का दौर आ गया है जिससे घर बैठे ही खातों का लेन–देन हम कर सकते हैं। मेरा यह खाता शाखा जी. टी. बी. नगर, दिल्ली में वर्ष 2018 में शाखा प्रबंधक द्वारा खोला गया था, मेरा जमा खाता एवं चालू खाता दोनों हैं। मेरी फर्म का नाम "शिव शक्ति प्लास्टिक" है। उसके बाद धीरे–धीरे शाखा प्रबंधक से संपर्क रहते–रहते तथा उनके व्यवहार द्वारा मेरे सभी परिवार जनों का खाता खुला लिया था। सभी स्टाफ सदस्यों से आज तक भी अच्छे संबंध बने हुए है। कोरोना के दौरान आई वैश्विक आपदा के कारण मुझे जब कभी भी पूंजी संबंधी आवश्यकता हुई, तो शाखा प्रभारी ने हमेशा जरूरत से ज्यादा मेरा ध्यान रखकर ऋण सुविधा उपलब्ध करवाई, जैसे संपत्ति के विरुद्ध ऋण, शिक्षा के विरुद्ध ऋण इत्यादि। इन सबके कारण मैंने व्यापार में हुए बहुत बड़े घाटे से ऊपर उठ पाया।

इसके बाद, ईश्वर की कृपा से तथा बैंक की सहायता से मेरा व्यापार भी ठीक–ठाक चलने लगा। इसमें एक बात और कहना चाहूँगा कि कोरोना के दौरान जब सभी के काम धंधा ठप थे और मेरे पास संपत्ति का अभाव था, मुझे किसी से भी आर्थिक मदद नहीं मिल पा रही थी क्योंकि मुझे मेरी बेटी की इंजीनिरिंग के दाखले हेतु पंजीकरण करवाना था, मेरे पास उसके कॉलेज के पंजीकरण हेतु पैसे नहीं थे तब मैंनें कई जगह बैंकों से बात की परंतु, मुझे ऋण कही से नहीं मिल रहा था, फिर मैनें कोरोना की भंयकर स्थिति के चलते, बड़ी हिम्मत करके, शाखा प्रभारी से संपर्क किया था, तो शाखा प्रबंधक ने अतिशीघ्र मेरी समस्या सुनकर, मेरी बेटी के लिए मुझे पढ़ाई हेतु ऋण उपलब्ध करवाया। इसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इन सभी खातों से मैं अब भी लेन–देन कर रहा हूँ। समय–समय पर स्टाफ की बदली होती रहती है, परंतु मुझे शाखा प्रभारी एवं स्टाफ से हमेशा ही सहयोग मिलता रहा है।

मैं पंजाब एण्ड सिंध बैंक की इस शाखा से पूरे दिल से धन्यवाद करता हूँ कि मेरे अच्छे एवं बुरे समय में शाखा से संपूर्ण सहयोग मिलता रहा है। ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आपका बैंक दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करें।

शुभकामनाओं सहित!

अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुंचाना, यही तपस्या का स्वरूप है – संत तिरूवल्लुवर

अंचल कार्यालयों में स्थापना दिवस समारोह 2022

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय चंडीगढ़

अंचल कार्यालय गाँधीनगर, गुजरात

अंचल कार्यालय दिल्ली–I

अंचल कार्यालय गुरूग्राम

अंचल कार्यालय फरीदकोट

अंचल कार्यालय जयपुर

अंचल कार्यालय भोपाल

अंचल कार्यालय नोएडा

संसदीय राजभाषा समिति की

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति ने 13 अप्रैल, 2022 को हमारे बैंक की कुल्लू शाखा का राजभाषाई दायित्व भी दिया गया था। निरीक्षण कार्यक्रम में बैंक के कार्यकारी निदेशक डॉ. रामजस यादव, क्षेत्र महाप्रबंधक चंडीगढ़ प्रबंधक (कुल्लू) श्री टशी नोरबू ने बैंक का प्रतिनिधित्व किया।

अतीत चाहे जैसा हो, उसकी स्मृतियाँ प्रायः सुखद होती है। - प्रेमचंद

तीसरी उपसमिति का कुल्लू दौरा

निरीक्षण किया। समिति द्वारा कुल 08 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया जिसमें हमारे बैंक को समन्वय कार्य का श्री प्रवीण कुमार, मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री कामेश सेठी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा तथा शाखा

भाविक सरोया

आजादी के 75 वर्ष : उपलब्धियाँ और चुनौतियाँ

लगभग 200 वर्ष के ब्रिटिश शासन को समाप्त कर औपनिवेशिक बंधन से मुक्त होने के उपलक्ष्य में भारत, प्रत्येक वर्ष 15 अगस्त को स्वतंत्रता पर्व के रूप में मनाता है। यह उन बलिदानों की याद दिलाता है जो कई स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए किए थे। हालांकि भारत एक आधुनिक राष्ट्र है लेकिन यह अनिवार्य रूप से बहुलवादी सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने में एक प्राचीन और समृद्ध 5,000 साल पुरानी सभ्यता का प्रतीक भी है। भारत की प्राचीन सभ्यता के आंतरिक मूल्यों ने इस आधुनिक राष्ट्र के विकास को सात दशकों से पूरक बनाया है और कभी–कभी इसे बाधित भी किया है। सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि से भारत एक प्रकार का द्वैतवाद प्रस्तुत करता है। जब से देश के पहले प्रधानमंत्री ने लाल किले पर भारतीय ध्वज फहराया, तब से भारत अपने ''ट्रिस्ट विद डेस्टिनी'' को जारी रखने के इरादे से आगे बढ़ रहा है। एक स्वतंत्र भारत को एक तबाह अर्थव्यवस्था, व्यापक निरक्षरता और दरिद्रता के अधीन किया गया था। भारत ने राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य में कई बदलाव, उतार–चढ़ाव देखे हैं। युद्ध से तबाह विभाजन के कष्टदायी अनुभव से गुजरते हुए, धार्मिक कट्टरवाद, भाषाई विरोध, सांप्रदायिक झड़पों से तबाह, फिर भी सभी के सामने आज मजबूती से खड़ा हुआ है। भारत ने 1947 से 2022 तक की अपनी यात्रा में बहुत सी चीजें हासिल की हैं और खोई हैं।

स्वतंत्रता के बाद से, भारत की नियति शेष विश्व के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। भारत ने दुनिया को उपनिवेश से मुक्त करने, एशिया और अफ्रीका में स्वतंत्रता आंदोलनों को राजनयिक और सुरक्षा सहायता प्रदान करने और कोरिया और कांगो को सैन्य मिशन भेजने में एक सक्रिय भूमिका निभाई है। इसकी स्वतंत्रता ने स्वतंत्रता संग्रामों को भी प्रेरित किया, विशेष रूप से अफ्रीका में, दुनिया भर में उपनिवेशवाद के एक युग का उद्घाटन किया लेकिन खुशी के साथ–साथ एक स्पष्ट मान्यता थी कि स्वतंत्रता जबरदस्त चुनौतियों और जिम्मेदारियों के साथ आई थी। राष्ट्रीय एकता, संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखने का कार्य, विभाजन के बाद और भी महत्वपूर्ण हो गया। वर्ष 1947 के भारत–पाक युद्ध ने भारतीय सेना को एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देखा। राज्य की सीमाओं के पार एक तीव्र युद्ध छेड़ दिया गया। पाकिस्तान को महत्वपूर्ण नुकसान हुआ और उसे उस रेखा पर रोक दिया गया जिसे अब नियंत्रण रेखा कहा जाता है। वर्ष 1962 का भारत–चीन युद्ध अक्साई चीन क्षेत्र में छिड़ गया। इन क्षेत्रीय चुनौतियों ने एक खतरा बना दिया है लेकिन हर बार भारत ने पलटवार किया। भारत अखंड रहा है, कोई अलगाववादी आंदोलन सफल नहीं हुआ है, भारतीय नागरिक हर कोने में राष्ट्रीय परियोजना के साथ एकीकृत महसूस करते हैं, यह एक असाधारण उपलब्धि है। इस सिद्धांत को

प्रकृति की खोज करके आप स्वयं को खोजते हैं। – मैक्सिमे लगैसे

संस्थागत बनाने के लिए कि लोग संप्रभु थे, भारत ने लोकतंत्र के सिद्धांतों की स्थापना की और सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया है। आवधिक चुनावों ने नागरिकों को अपने प्रतिनिधि चुनने की अनुमति दी है। स्वतंत्र संस्थानों, चुनाव आयोग, स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र प्रेस ने यह सुनिश्चित किया है कि कार्यकारी शक्ति पर नियंत्रण हो। केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के स्पष्ट रूप से परिभाषित विभाजन के साथ एक संघीय संरचना है।

हमारे पास किसी एक राष्ट्र में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या सबसे अधिक है, भारत में 29 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से प्रत्येक में दस लाख से अधिक लोग रहते हैं। भारतीय संस्कृति का निर्विवाद पहलू विविधता में इकाई है। भारत अपनी धर्मनिरपेक्ष साख और समाजवादी प्रकृति के कारण दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यह एशिया का एकमात्र देश है जो ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से लोकतांत्रिक बना हुआ है। भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जिसने अपने पहले दिन से ही प्रत्येक वयस्क को मताधिकार दिया है। सरकार के संसदीय स्वरूप की सफलता, कानून का शासन और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में लोगों का विश्वास स्वतंत्र भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियां हैं।

भारत का आर्थिक इतिहास एक बड़े पैमाने पर कृषि और व्यापारिक समाज से विनिर्माण और सेवा की मिश्रित अर्थव्यवस्था में भारत के विकास की कहानी है हालांकि बहुमत अभी भी कृषि पर जीवित है। सार्वजनिक क्षेत्र के साथ मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति ने अर्थव्यवस्था की कमांडिंग ऊंचाई की मांग की जिससे कई उद्योगों की स्थापना हुई और राष्ट्र की प्रगति हुई। स्वतंत्रता के ठीक बाद, भारत खाद्यान्न का आयात कर रहा था और साठ के दशक के मध्य तक अंतरराष्ट्रीय खाद्य सहायता पर निर्भर था। वर्ष 1963 में, हरित क्रांति ने बेहतर बीज और प्रौद्योगिकी के साथ कृषि का आधुनिकीकरण किया। हरित क्रांति ने भारत के कृषि उत्पादन को एक बड़ा प्रोत्साहन दिया और उच्च उपज किस्म के बीजों के उपयोग और ट्रैक्टरों, कीटनाशकों और उर्वरकों के व्यापक उपयोग के माध्यम से खाद्यान्न के मामले में इसे आत्मनिर्भर बना दिया। आज भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है और विभिन्न खाद्यान्नों का निर्यात करता है। हम ताजे फल, दूध, दालें और तिलहन, सूरजमुखी के बीज और गेहूं, चावल, गन्ना, आलू, चाय, कपास आदि के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक हैं। 1950–51 में खाद्यान्न उत्पादन 50.8 मिलियन टन था जो 2020–21 में लगभग 305.44 मिलियन टन हो गया। वर्ष 1970 में, ऑपरेशन फ्लड के परिणामस्वरूप भारत दूध की कमी वाले देश से दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक बन गया। भारत दुनिया में गन्ना का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और कपास का सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

स्वतंत्रता के समय भारत की साक्षरता दर मात्र 18 प्रतिशत थी। एनएसओ के अनुसार 2020–21 में साक्षरता दर 77.7 प्रतिशत थी। 1947 में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा 32 थी, अब यह लगभग 69.4 वर्ष है। हमने अपने देश से विभिन्न महामारियों और पोलियो का सफलतापूर्वक उन्मूलन किया है। स्वतंत्र भारत की एक और महान उपलब्धि बुनियादी भारी उद्योगों के विकास में भारी निवेश है जिसने विशाल इस्पात संयंत्रों और बांधों आदि के रूप में भारत की ढांचागत रीढ़ को विकसित करने में मदद की। भारी उद्योगों के विकास में भारी निवेश का केंद्रीय विषय था। बैंकों का राष्ट्रीयकरण (1969), जिसने भारत की बैंकिंग प्रणाली को कॉर्पोरेट परिवारों के नियंत्रण से मुक्त कर दिया और इस प्रकार पूंजी के एकाधिकार को काफी कम कर दिया और सही कनेक्शन के बिना आम लोगों को अधिक ऋण देकर अर्थव्यवस्था को बढ़ने में मदद की। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि बैंकों के राष्ट्रीयकरण ने कुछ हद तक भारतीय अर्थव्यवस्था में समान विकास में योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद भारत की एक और बड़ी उपलब्धि उच्च शिक्षा के कुछ विश्व स्तरीय संस्थानों का निर्माण और विकास करना था, जैसे कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भारतीय प्रबंधन संस्थान, भारतीय सांख्यिकी संस्थान, जहां नाममात्र की लागत पर गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक शिक्षा का प्रसार किया गया है। इसने वर्षों से ऐसे विश्व स्तरीय संस्थानों को भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए आर्थिक रूप से सुलभ बना दिया है।

इसने कई वंचित लेकिन प्रतिभाशाली लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने और आर्थिक और सामाजिक पदानुक्रम के बेहतर पक्ष में जाने और विदेशों में नाम और प्रसिद्धि प्राप्त करने में मदद की है।

भारत परमाणु कार्यक्रम की जड़ें वर्ष 1945 में डॉ. एच. भाभा की पहल के साथ टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान की स्थापना में हैं। इसने परमाणु भौतिकी और ब्रह्मांडीय किरणों में शोध किया। वर्ष 1948 में भारतीय परमाणु कार्यक्रम के लिए काम करने के लिए परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन किया गया था। भारत थोरियम के सबसे बड़े भंडार वाले देशों में से एक है जो वैश्विक भंडार का लगभग 30% है। 2020 तक, देश में 6780 मेगावाट की स्थापित क्षमता वाले 22 रिएक्टर में से 80% प्लांट लोड फैक्टर से ऊपर काम कर रहे हैं। भारत विश्व अंतरिक्ष की दौड़ में अग्रणी खिलाड़ियों में से एक है। कल्पना चावला से लेकर चंद्रयान–2 तक देश ने साबित कर दिया है कि वह अंतरिक्ष, ग्रहों और पृथ्वी की खोज करने से पीछे नहीं हटता है। आर्यभट्ट को पूरी तरह से भारत में डिजाइन और निर्मित किया गया था। भारत ने रोहिणी के नाम से जाने जाने वाले चार उपग्रहों की एक श्रृंखला विकसित और लॉन्च की। चंद्रयान–1 भारत की टोपी में एक पंख है। अंतरिक्षयान ने मनुष्य के रासायनिक, फोटो–भूगर्भिक और खनिज संबंधी मानचित्रण के लिए चंद्रमा के चारों ओर परिक्रमा की। 2013 में, भारत ने मार्स ऑर्बिटर मिशन लॉन्च किया और मंगल पर अपने पहले प्रयास में सफल होने वाला पहला देश बन गया। इसरो मंगल की कक्षा में पहुंचने वाली दुनिया की चौथी अंतरिक्ष एजेंसी बन गई।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा फार्मास्यूटिकल्स उत्पादक है, जिसमें दवाएं और टीके शामिल हैं। भारत दुनिया की आपूर्ति का 60% तक बनाता है जिसका उपयोग विकसित और विकासशील दोनों देशों द्वारा किया जाता है। चिकित्सा उत्पादों के उत्पादक के रूप में अपनी भूमिका के कारण भारत को ''विश्व की फार्मेसी'' कहा जाता है। इस शब्द को हाल की घटनाओं से और मजबूत किया गया है जहां भारत ने दुनिया के अधिकांश हिस्सों को कोविड –19 टीके और अन्य दवाओं की आपूर्ति की है। अस्सी के दशक के मध्य में बड़े पैमाने पर कम्प्यूटरीकरण का आगमन, स्वतंत्रता के बाद के भारत के लिए महत्वपूर्ण सकारात्मक विकासों में से एक है जिसने अंततः भारत को एक विशाल आईटी शक्ति के रूप में माना। हाल के वर्षों में, भारत में डिजिटलीकरण ने और गति पकड़ी है जिसके कारण भारत में ऑनलाइन शिक्षा में तेजी आई है, जो बदले में इन कोविड प्रवृत्त समय में एक वरदान के रूप में आया है। सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 भारत के आम नागरिकों को राज्य की उच्च और शक्तिशाली शक्तियों को उनके प्रति जवाबदेह बनाने का अधिकार देता है। यह भारत में सार्वजनिक कार्यालयों में पारदर्शिता और ईमानदारी को बढ़ाने में सफल रहा है जिससे उत्तर–आधुनिक भारत में सार्वजनिक कार्यालयों में भ्रष्टाचार की चिरस्थायी अस्वस्थता पर काफी हद तक अंकुश लगा है।

इन 74 वर्षों में भारत ने कुछ असफलताओं का भी सामना किया है। आज भी भारतीय राज्य अधिकांश भारतीयों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा मुफ्त में उपलब्ध नहीं करा पाया है। यहां तक कि बुनियादी सुविधाएं और बुनियादी ढांचा भी अक्सर भारतीयों के एक बड़े वर्ग की पहुंच से बाहर होता है। एक और देश में राजनीति में अपराधीकरण का उदय है जो लगातार अपने चुनावी लोकतंत्र के सार को कम कर रहा है जैसा कि इसके संविधान के संस्थापकों ने कल्पना की थी। समाज और राजनीति से जातिवाद और सांप्रदायिकता की पुरातन और अमानवीय ताकतों के प्रसार को दूर करने में विफलता एक और चुनौती है। आबादी का एक बड़ा वर्ग बिना किसी लाभ के असंगठित क्षेत्र में काम करता है, वह कार्य अनियमित है, और बुनियादी जरूरतों को पूरा करना कई लोगों के लिए संघर्ष बना हुआ है। अनुसूचित जाति, आदिवासी और ग्रामीण आबादी, महिलाओं, ट्रांसजेंडर, एचआईवी के साथ रहने वाले लोगों और प्रवासियों सहित देश के सबसे हाशिए के समूहों की निम्न मानव विकास प्राप्तियों में लगातार असमानता परिलक्षित होती है। उच्च स्तर की निरक्षरता, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और संसाधनों तक सीमित पहुंच गरीब क्षेत्रों की कुछ बुनियादी समस्याएं हैं।

पिछले वर्षों में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में वृद्धि देखी गई है। सुरक्षा निश्चित रूप से हमारे देश में बढ़ती चिंताओं में से एक है, खासकर महिलाओं के संबंध में। घरेलू हिंसा, बलात्कार, मीडिया में महिलाओं के चित्रण आदि जैसे मुद्दों से तुरंत निपटा जाना चाहिए। भारत में लैंगिक असमानता, आर्थिक विकास की उच्च–दर के बावजूद बनी हुई है। पुरुषों की तुलना में महिलाएं रोजगार और निर्णय लेने में बहुत कम भाग लेती हैं। बाल श्रम भारत की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई है। भारत एक ऐसा देश है जो दुनिया भर में अपनी कृषि के लिए व्यापक रूप से प्रसिद्ध है लेकिन हमारे देश की दुर्दशा इस तथ्य में है कि यहां किसानों को बहुत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे सिंचाई प्रणाली की बुनियादी सुविधाओं का अभाव, कृषि उपकरण और लघु या दीर्घकालिक ऋण। भारत में लगभग 68 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि सूखे से ग्रस्त है और कुल भूमि का लगभग 12 प्रतिशत बाढ़ प्रवण है। लंबित न्याय नौकरशाही की सुस्ती के साथ–साथ भारत की अदालतों में मामलों का धीमी गति से निपटारा एक ऐसा संकट है जिसे देश को प्राथमिकता के आधार पर ठीक करना होगा।

गंभीर 'पहुंच' बाधाएं वर्तमान में भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वालों की आकांक्षाओं को बाधित करती हैं। पहला, सीमित भौतिक संपर्क (उदाहरण के लिए हर मौसम में सड़कों और बिजली तक पहुंच), दूसरा, डिजिटल कनेक्टिविटी की कमी (जैसे इंटरनेट तक पहुंच) और तीसरा, सीमित वित्तीय समावेशन (जैसे वाणिज्यिक बैंकों और बैंक खातों तक पहुंच)। जैसा कि देश परिकल्पित विकास के एक नए युग में प्रवेश करता है, अब सभी भारतीयों के लिए एक साथ आने और आज देश के सामने सबसे अधिक दबाव वाली सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने का समय है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोगात्मक प्रयास, विशेष रूप से सार्वजनिक–निजी भागीदारी, एक युवा, प्रगतिशील और गतिशील राष्ट्र की पूरी क्षमता को अनलॉक कर सकते हैं, और भारत को दुनिया के तेजी से बढ़ते उपभोक्ता बाजारों के लिए एक मॉडल के रूप में स्थापित कर सकते हैं।

वर्ष 2021 में हमने अपनी स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में प्रवेश किया था। यह हमारे गणतंत्र की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और हमारी पिछली उपलब्धियों और भविष्य की चुनौतियों पर चिंतन और आत्मनिरीक्षण का अवसर है। क्रय शक्ति समानता के मामले में हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। 30 वर्ष से कम की औसत आयु के साथ, भारत एक उम्रदराज दुनिया में एक युवा राष्ट्र है। इस युवा ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण के लिए रचनात्मक रूप से इस्तेमाल करने की जरूरत है। हमें ग्रामीण–शहरी विभाजन और उभरते डिजिटल विभाजन को पाटने का प्रयास करना चाहिए। अकेले सरकारें इन सभी कार्यों को पूरा नहीं कर सकती हैं। निजी क्षेत्र को भी हाथ मिलाना होगा। सार्वजनिक–निजी भागीदारी भारत के विकास का मार्ग है। विकास कार्यक्रमों में लोगों की भागीदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत मिशन की सफलता ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि सरकारी कार्यक्रमों को जन आंदोलन, लोगों के स्वामित्व और नेतृत्व में होना चाहिए। हमारा उद्देश्य एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है जहां हर कोई अपनी पूरी क्षमता तक पहुंच सके और एक पूर्ण और सार्थक जीवन जी सके। चल रहे कोविड –19 महामारी ने जीवन के सामान्य पाठ्यक्रम को बाधित कर दिया है और हमारे जीवन में जबरदस्त तनाव ला दिया है लेकिन अच्छी खबर यह है कि हमने महामारी के प्रति अपनी सामूहिक प्रतिक्रिया को सावधानीपूर्वक कैलिब्रेट किया है। हमारे संकल्प और लचीलेपन ने हमें नकारात्मक प्रभाव को सहन करने के लिए प्रेरित किया है।

इन और कई नुकसानों के बावजूद, यह उल्लेखनीय है कि यह आधुनिक राष्ट्र, अपनी प्राचीन सभ्यता की तरह बिना रुके लगातार प्रगति कर रहा है। इस बदलते वैश्विक परिदृश्य में, भारत के पास अपनी सुरक्षा, विकास और दुनिया भर के विकासशील देशों के लिए एक नया ढांचा तैयार करने का अवसर है। परिवर्तन की गति और आगे की चुनौतियों को देखते हुए, भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी के अवसर पर स्वतंत्रता दिवस पर एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण कर सकता है। भारत सरकार को एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की जरूरत है जो निजी निवेश, बढ़ी हुई खपत, निर्यात की प्रतिस्पर्धात्मकता और तेजी से ढांचागत निवेश को सक्षम करे। ये कदम भारत को एक वैश्विक महाशक्ति का दर्जा दिला सकते हैं, जिसका वह हक़दार हैं।

अंचल कार्यालय जालंधर

काव्य-मंजूषा

हुनर

कब रुका है हुनर,
किसी हुक्म के आगे,
कब झुका है हुनर,
किसी जुल्म के आगे,
ये तो बस वहम है उसका,
कि बेबस हो जायेगा वो,
किसी–न–किसी सितम के आगे।

अयस तपन में जितना अधिक,
वो उतनी धार लेता है,
कुंदन परिष्कार के बाद ही,
असल निख़ार लेता है,
जाने क्यूँ भूल जाते हैं लोग
बार–बार,
कि कुछ ख़ास लोगों के ही खुदा,
इम्तिहान हजार लेता है।

और जिसमें ये हुनर होता है न,
वो लाख जुल्म–ओ–सितम से भी,
पार पा ही लेता है।

सोनी कुमार
अंचल कार्यालय जालंधर

आज की नारी

किसी पे बोझ नहीं हूँ मैं
फिर भी हर रोज घोटी जाती हूँ
मैं वही पुरानी वाली नारी नहीं
अब इस घुटन से निकलने लगी हूँ
क्योंकि खुद को समझने लगी हूँ मैं।

क्या सोच रहे हो?
वही पुरानी वाली, नहीं आज की नारी
सती प्रथा में पति के साथ जलकर
चिखने–चिल्लाने वाली नहीं
बल्कि पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर
चलने वाली नारी हूँ मैं।

तारों के साथ आकाश पार करने वाली कल्पना हूँ
कुश्ती का मैदान मारने वाली गीता हूँ
क्या सोच रहे हो?
वही पुरानी वाली, नहीं आज की नारी हूँ

केवल घर पर नहीं, देश की सीमा में हूँ
जहाँ न्याय मिलता है, जीवन दान मिलता है
वहाँ पर भी हूँ मैं

अब नहीं छीन सकता कोई अधिकार मेरा
दहेज के लिए मुझे मरने को
मजबूर नहीं कर सकता कोई
क्योंकि आज की नारी हूँ मैं।

प्रज्ञा सिंह
अंचल कार्यालय गाँधीनगर

साहस और धीरज कर्म-रथ के दो पहिए हैं। – गोस्वामी तुलसीदास

हौसला

तेरे हौसलों के आगे ही नतमस्तक जहान होता है,
इसी से दुनिया में रोशनी, इसी से रेहान होता है।

टकराते हैं, खोते नहीं जज्बा
जो आफत की घड़ी में
दस हजार अफगानों से यूं ही नहीं भिड़ जाते
इक्कीस योद्धा सारागढ़ी में
गर किया हो दृढ़ निश्चय तो पैरों तले आसमान होता है,
तेरे हौंसलों के आगे ही तो नतमस्तक जहान होता है।

पहले देश, फिर धर्म, फिर साथी
और अंत में अपनी जान
पराक्रम का प्याला पीने वालों की
यही तो होती है एकमात्र पहचान
किसी के आगे झुक कैसे सकता है वो
जब खून से बड़ा आत्म–सम्मान होता है,
तेरे हौंसलों के आगे ही तो नतमस्तक जहान होता है।

कर्तव्यनिष्ठा, जोश और जज्बे का
बोध करते हैं जो अपने प्रण में
अमर हो जाते हैं वो बालक
जिंदगी के हर एक रण में
उनके पथ–परचम के आगे टिकता न कोई तूफान होता है,
तेरे हौंसलों के आगे ही तो नतमस्तक यह जहान होता है।

अभिषेक वर्मा
शाखा मुकंदपुर
होशियारपुर अंचल

अनंत की ओर

चलो अनंत की ओर
एक कदम बढ़ाते हैं
फिर बाकी रहेगी थोड़ी दूरी
ये थोड़ी दूरी भी अनंत होगी

चलो अनंत तारों में से
किसी एक तारे को चुनते हैं
चलते हैं उस तारे पर
और एक जहां बनाते हैं
ये दुनिया उन अनंत
दुनियाओं से अलग होगी
जो अनंत तारों पर होगी

चलो आज पूरा करते हैं
उन अनंत सपनों में से एक सपना
जो हमने कभी देखा होगा
फिर कुछ सपने ही बचेंगे
पूरे होने को
ये सपने भी अनंत होंगे

चलो जलाते हैं एक दीया
कुछ उजाला फैलाते हैं
फिर बाकी बचेगा कुछ अंधेरा ही
ये अंधेरा भी अनंत होगा
इसको भरने के लिए
अनंत रोशनी भी लानी होगी।

पंकज चंदनानी
शाखा धबोटी, भोपाल अंचल

जनरल राजेश

सूचना प्रौद्योगिकी एवं साइबर सुरक्षा की चुनौतियां व समाधान

वर्तमान सदी सूचना प्रौद्योगिकी की सदी है। हाल ही में दुनिया के धनवान व्यक्तियों में से एक श्री एलेन मस्क महाशय ने ट्विटर का करीब 42 बिलियन डॉलर मे सौदा कर लिया। यह धनराशि विश्व के सैकड़ों देशों की कुल बजट से अधिक है। इसी संदर्भ से सूचना एवं सूचना तंत्र के महत्व को समझा जा सकता है ।

हमारा देश भी सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आज विश्व में अग्रणी भूमिका में खड़ा है। आज इंटरनेट उपयोगकर्ता संख्या के लिहाज से अमेरिका एवं चीन के बाद भारत का तीसरा स्थान है। सूचना तंत्र ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, खेल, कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। पूरी दुनिया में वस्तुओं और सेवाओं को संगठित करने में सूचना की एक विशाल श्रृंखला का निर्माण होता है। सूचना की यह विशाल श्रृंखला, सुचारू आवागमन हेतू कंप्यूटर और नेटवर्क पर निर्भर है। कंप्यूटर, इंटरनेट, राउटर, सर्वर के इस बुनियादी ढांचे को सम्मिलित रूप से "साइबर स्पेस" कहा जाता है अर्थात साइबर नेटवर्क में जुड़कर बनने वाला वातावरण या सूचना भंडार ही साइबर स्पेस है।

साइबर स्पेस ने उपयोगकर्ताओं के लिए सूचना के भंडार को सुलभ बना दिया है। आज एक आम आदमी भी इस माध्यम के उपयोग से विचारों का आदान–प्रदान, संगीत सुनना, पुस्तक पढ़ना जैसे कार्यों को आसानी से कर सकता है। आज संचार के इन डिजिटल उपकरणों की पहुंच पहाड़ की ऊचाइयों से लेकर समुद्र की गहराइयों तक है अर्थात आज के समय में साइबर स्पेस इतना विशाल हो गया है कि इसका अनुमान लगाना भी कठिन है। साइबर स्पेस की मुख्य विशेषता यह है कि यह भौगोलिक एवं राजनैतिक सीमाओं से परे है। एक तरफ जहां साइबर स्पेस का उपयोग आम जीवन में बढ़ा है वहीं कुछ लोग इसमे रुकावट डालकर एवं छेड़छाड़ कर इसका दुरुपयोग भी कर रहे हैं। इस दुरुपयोग का लक्ष्य व्यक्तिगत या संस्थाओं को नुकसान पहुचाने के लिए किया जाता है। इन दुरुपयोगों का परिणाम कई बार बहुत ही व्यापक हो जाता है। अतः साइबर स्पेस को सुरक्षित रखना विश्व समुदाय के लिए अति आवश्यक है।

साइबर सुरक्षा से आज जीवन का कोई भी पहलू अछूता नहीं है परंतु बैंकिंग के क्षेत्र के लिए यह एक संवेदशील विषय है। आज लगभग सभी बैंकों में कार्य कंप्यूटर एव इंटरनेट के माध्यम से हो रहा है। इन रोजाना के क्रियाकलापों में लाखों सूचनाओं का आदान–प्रदान होता है। इन सूचनाओं को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इनका सीधा संबंध संपत्ति एवं आर्थिक गतिविधियों से है। जब भी किसी बैंक के साइबर स्पेस में साइबर हमले की कोई घटना होती है तो बैंकों को इसका बहुआयामी नुकसान उठाना पड़ता है। जैसे धन की हानि, ग्राहकों की हानि, प्रतिष्ठा की हानि इत्यादि।

जिस तरह बरगद के बीज में पूरा एक बरगद समाया रहता है, उसी तरह एक नन्हें बालक में भविष्य का एक महान नागरिक छिपा रहता है – अज्ञात

साइबर सुरक्षा या सूचना सुरक्षा – सूचना संसाधन सुरक्षा या साइबर सुरक्षा का अर्थ है, "सूचना, सूचना प्रणाली या पुस्तकों तक अनधिकृत पहुंच, क्षति, चोरी या विनाश से बचाना"। सूचना सुरक्षा एक बहुआयामी विषय है। हम लोगों ने भी किसी न किसी रूप में साइबर सुरक्षा के हमलों का अनुभव किया है। वर्तमान में सबसे सामान्य खतरों में सॉफ्टवेयर हमले, बौद्धिक संपदा की चोरी, पहचान की चोरी, उपकरण या सूचना की चोरी, तोड़फोड़ और सूचना जबरन वसूली हैं। वायरस, वर्म्स, फिशिंग अटैक और ट्रोजन हॉर्स सॉफ्टवेयर इसके सामान्य उदाहरण हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में संस्थाओं के लिए बौद्धिक संपदा की चोरी एक बड़ी चुनौती है। पहचान की चोरी आमतौर पर किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करने से है। इसके खतरे बहुआयामी हैं। सोशल इंजीनियरिंग के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर उनकी पहुंच का लाभ उठाया जाता है। उपकरण या सूचना की चोरी भी आज के समय में अधिक प्रचलित हो रही है। तोड़फोड़ में किसी संगठन की वेबसाइट को क्षति करना या संबंधित डाटा की चोरी शामिल है। इससे उस संगठन के ग्राहकों का विश्वास कम कर नुकसान पहुंचाया जाता है। सूचना जबरन वसूली में जानकारी या संपत्ति वापस करने के बदले में भुगतान प्राप्त किया जाता है।

साइबर अपराध के प्रकार – साइबर हमला का अर्थ है "यह व्यक्ति या पूरे संगठन द्वारा नियोजित तरीके से की गई किसी भी प्रकार की आपत्तिजनक गतिविधि जो लक्षित कंप्यूटर तंत्र को हानि पंहुचाने या नष्ट करने के उद्देश्य से कंप्यूटर सूचना प्रणालियाँ तथा कंप्यूटर नेटवर्क को लक्ष्य बनाती है"। साइबर हमलों को इनके संदर्भ एवं गंभीरता के आधार पर साइबर युद्ध (cyberwarfare), साइबर आतंकवाद (Cyber Terrorism) या साइबर जासूसी (Cyber Espionage) का नाम दिया जा सकता है।

- **साइबर युद्ध (cyberwarfare)** – यह युद्ध इंटरनेट एवं कंप्यूटर के माध्यम से लड़ा जाता है। युद्ध का स्थान भौतिक न होकर कंप्यूटर एवं नेटवर्क होता है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनेरी के अनुसार साइबर युद्ध (cyberwarfare) को "विशेष रूप से रणनीति या सैन्य सूचनाओं के लिए जान बूझकर हमला कर किसी राज्य या संगठन की गतिविधियों को बाधित करने के लिए कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के उपयोग के रूप मे परिभाषित करता है। साइबर युद्ध (cyberwarfare) मे तकनीकी उपकरणों को भी बड़ी हानि होती है। युद्ध के पुराने तरीकों की तरह साइबर युद्ध में भी किसी भी देश की डिफेन्स सिस्टम और काउन्टर अटैक की तैयारी रखनी पड़ती है। विश्वभर में सरकारें इसके लिए साइबर

कमानों (Cyber Commands) की स्थापना और उन्हें बढ़ावा दे रही है। विशेषज्ञों के अनुसार साइबर युद्ध के लिए सबसे बड़ी तैयारी चीन की मानी जाती है।

- **साइबर आतंकवाद (Cyber Terrorism)** – साइबर आतंकवाद, आतंकवाद और साइबर स्पेस का मिला जुला रूप है। साइबर स्पेस से संबधित आतंकवाद की कार्यवाही या साइबर प्रौद्योगिकी का उपोयग करके समस्त आतंकवादी कार्यवाही को "साइबर आतंकवाद" (Cyber Terrorism) कहा जा सकता है। साइबर आतंकवाद की कार्यवही आमतौर पर सरकार या उसके लोगों को धमकाने हेतु कंप्यूटर, नेटवर्क और उसमे संग्रहीत जानकारी के विरुद्ध उत्पन्न किए जाने वाले गैर कानूनी हमलों और खतरों के रूप मे माना जाता है। ये हमले व्यक्ति या संपत्ति के विरुद्ध हिंसा के रूप में होना चाहिए या कम से कम उसके द्वारा भय उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त हानि उत्पन्न की जानी चहिए। इसके अलावा आतंकवादी हमलों की योजना बनाने, समर्थन जुटाने, अनुदान प्रयोजन आदि के लिए साइबर स्पेस का उपयोग साइबर आतंकवाद (Cyber Terrorism) की श्रेणी में आता है।

- **साइबर जासूसी (Cyber Espionage)** – साइबर जासूसी एक महत्वपूर्ण साइबरथ्रेट है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनेरी के अनुसार, साइबर जासूसी "गोपनीय जानकारी तक अवैध पहुँच प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर नेटवर्क का उपयोग है जो आमतौर पर सरकार या अन्य संगठन द्वारा आयोजित की जाती है। "यह सामान्यतः खुफिया जानकारी एकत्रित करने, डाटा चोरी करने से सम्बद्ध है।

भारत में साइबर अपराध– आज हमारे देश में साइबर अपराध के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार साल 2022 में साइबर अपराध के मामलों में 11 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। भारत में वर्ष 2017 में साइबर अपराध के 21,796

मामले दर्ज किए गए, वर्ष 2018 में 27248, वर्ष 2019 में 44735 और वर्ष 2020 में ये आंकड़ा 50035 तक पहुंच गया। भारत में साइबर अपराध की घटनाएं व्यक्तिगत हमलों से लेकर अति महत्वपूर्ण संस्थाओं तक अपनी उपस्थिती दर्ज करा चुका है। इन संस्थाओं में विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन एवं परमाणु ऊर्जा निगम तक शामिल हैं। भारत मे ज्यादातर हमले संयुक्त राज्य अमेरिका, तुर्की, चीन, ब्राजील, पाकिस्तान जैसे देशों से किया गया है।

भारत में साइबर कानून एवं संस्थाएं

दुनिया के अन्य देशों की तरह अपने देश ने भी गैर कानूनी कार्यों को रोकने के लिए साइबर सुरक्षा के लिए जरूरी कानून बनाए हैं। साइबर अपराध को गैर कानूनी घोषित किया गया है। डाटा चोरी, धोखाधड़ी, जालसाजी के साथ अन्य कई कार्य भारतीय दंड सहिंता के अंतर्गत नियंत्रित करने के प्रयास किए गए हैं। इसके आलवा साइबर अपराधों की रोकथाम हेतु "सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000" पारित किया गया है। "सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000" में कई धाराएं बनाई गई है जो सीधे तौर पर साइबर अपराधों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से जुड़ी हुई है, यथा 43, 43A, 66, 66C, 66D, 66E, 66F, 67, 67A, 67B, 70, 72, 72A और 74 आदि।

भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद सचिवालय एवं राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी अनुसंधान संगठन को नोडल एजेंसी बनाया है। भारत सरकार ने 2013 में राष्ट्रीय सुरक्षा नीति जारी कर राष्ट्रीय अतिसंवेदनशील सूचना अवसंरचना संरक्षण केंद्र (National Critical Information Infrastructure Protection Center - NCIIPC) का भी गठन किया है। इसके अलावा भारत सरकार ने साइबर सुरक्षा के लिए कंप्यूटर इमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम (CERT-In) एवं इंडियन साइबर को– ओर्डिनेशन सेंटर की स्थापना की है।

साइबर एवं सूचना सुरक्षा (सी एंड आई एस) प्रभाग – गृह मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत यह प्रभाग साइबर सुरक्षा, साइबर अपराध, राष्ट्रीय सूचना सुरक्षा नीति एवं दिशानिर्देश (एनआईएसपीजी) और एनआईएसपीजी, नैटग्रिड आदि के कार्यान्वयन से संबंधित कार्य करती है। इसके आलवा यह प्रभाग साइबर क्राइम के विरुद्ध लड़ने में नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। साइबर क्राइम से संबंधित अन्य देशों के साथ हुई पारस्परिक विधिक सहायता संधि (एमएलएटी) से संबंधित सभी गतिविधियों का समन्वय भी यह प्रभाग करता है। इसके अलवा अतिवादियों और आंतकवादियों की गतिविधियों को रोकने के लिए साइबर स्पेस के दुरुपयोग को रोकना भी इस प्रभाग की जिम्मेवारी है।

भारत में साइबर सुरक्षा की चुनौतियाँ – हमारे देश में साइबर सुरक्षा के लिए आवश्यक विभिन्न सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर से संबंधित तकनीकी पहलुओं को समझने के लिये सैन्य बलों, केंद्रीय पुलिस संगठनों में कुशल लोगों का अभाव है। इसके अलावा आर्टिफिशयल इंटेलिजेन्स, क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी अत्याधुनिक तकनीकी की समझ रखने वाले पेशेवरों की भी कमी है। संयुक्त राज्य अमेरिका, सिंगापुर और ब्रिटेन जैसे देशों में साइबर सुरक्षा के लिए कार्य करने वाला एक ही संगठन है जबकि भारत में कई केंद्रीय इकाइयां हैं जो साइबर सुरक्षा से जुड़े मुद्दों के लिए कार्य करती है लेकिन इन निकायों की कार्य–प्रणाली में एकरूपता की कमी साफ दिखती है। भारत में हार्डवेयर के साथ–साथ सॉफ्टवेयर साइबर सुरक्षा उपकरणों में स्वदेशीकरण भी एक बड़ी समस्या है। भारत की सरकारी एवं गैर– सरकारी संस्थाओं ने भी शोध कार्य में अरुचि ही दिखाई है।

भारत को एक स्पष्ट राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति की जरूरत है जिसमें रक्षात्मक और आक्रामक दोनों उपाय शामिल हो। साइबर चुनौतियों से निपटने हेतु आक्रामक साइबर हमलों के संचालन या साइबर हमलों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई के लिए साइबर कमांड की जरूरत है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों की भागीदारी की आवश्यकता है। साथ ही इन संस्थानों के बीच में समन्वय स्थापित करना भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। साइबर सुरक्षा और डिजिटल संचार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सॉफ्टवेयर के विकास हेतु अवसरों को बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों को साइबर सुरक्षा संबंधित आर्थिक और प्रतिष्ठा जोखिमों को ध्यान में रखते हुए आई टी सुरक्षा निवेश में वृद्धि की जानी चाहिए तथा इसके माध्यम से साइबर सुरक्षा योजना को अपनाया जाना चाहिए। साथ ही वर्तमान में स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्वदेशी एवं उपयुक्त हार्डवेयर विकसित किए जाने की भी जरूरत है।

भारतीय अर्थव्यवस्था तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था के उत्थान में राष्ट्रीयकृत बैंको की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बैंकों में नगदी व अन्य भौतिक सामग्रियों के साथ–साथ नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी भी अनुरक्षित रहती है। इसकी सुरक्षा और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है जब इन्हें कंप्यूटर पर डिजिटल रूप में रखा जाता है। भारतीय बैंकों में साइबर सुरक्षा का मूल उद्देश्य है ग्राहकों के सूचना एव धन को संरक्षित और सुरक्षित रखना। इसके लिए निम्न उपाय/सूझाव किए जा सकते हैं:

- **बहुस्तरीय सत्यता पहचान:** बैंकिंग कार्यों विशेषकर डिजिटल लेन–देन में बहुस्तरीय सत्यता पहचान के उपाय किए जाने चाहिए। यह व्यवस्था कर्मचारियों एवं ग्राहक दोनों के लिए किए जाने चाहिए।

- **साइबर बीमा:** साइबर सुरक्षा उपायों से साइबर हमलों को कम तो किया जा सकता है लेकिन इस पर पूर्ण विराम लगाना असंभव है। ऐसे में साइबर बीमा का उपयोग कर जोखिम एवं क्षति को कम किया जा सकता है। इससे ग्राहकों का विश्वास भी बना रहेगा।

- **ग्राहक जागरूकता:** डिजिटल माध्यम के बैंकिंग में प्रयोग बढ़ने से ग्राहक इन सेवाओं का उपयोग सीधे घर बैठे ही कर रहें हैं जिससे सुविधाएं तो बढ़ी हैं, साथ ही जोखिम भी बढ़ा है। अतः ग्राहक को जागरूक कर साइबर हमलों की संख्या में कमी लाई जा सकती है।

- **एंटी वायरस ऐप्लीकेशन:** साइबर विशेषज्ञ नए–नए खतरों से बचने के लिए नए उपायों या ऐप्लीकेशन का प्रयोग कर रहे हैं। बैंकिंग क्षेत्र भी इन उपायों को अपना कर अपने जोखिम एवं क्षति को कम कर सकता है।

वैश्विक परिदृश्य में साइबर सुरक्षा में हर रोज नए बदलाव हो रहे हैं। अतः नई चुनौतियाँ एवं नए समाधान भी होंगे परंतु यह भी तय है कि इसमें हमारे देश की भूमिका अहम होगी। आज हमारा देश जहां सबसे बड़े उपयोगकर्ता में शामिल है वहीं हमारे पास प्रर्याप्त मानव संसाधन है, केवल आवश्यकता है कि इन संसाधनों का समुचित एवं सही दिशा में उपयोग किया जाए।

आस्ति वसूली शाखा कोलकाता

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन 02 जून, 2022 को कार्यकारी निदेशक श्री कोल्लेगाल वी राघवेन्द्र की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में कार्यकारी निदेशक (राजभाषा) डॉ. रामजस यादव सहित प्रधान कार्यालय के समस्त विभागों के प्रमुखों ने सहभागिता की। इस अवसर पर बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका राजभाषा अंकुर के मार्च 2022 अंक का विमोचन भी किया गया। इस तिमाही बैठक में बैंक वेबसाइट के द्विभाषी संस्करण पर विशेष विचार–विमर्श किया गया।

नराकास उपलब्धियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा कंपनियां), गुरुग्राम से अंचल गुरुग्राम को वित्तीय वर्ष 2021–22 का 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार प्रशासनिक कार्यालयों की श्रेणी के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रदान किया गया है। चित्र में, उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा जी एवं नराकास अध्यक्ष से राजभाषा शील्ड तथा प्रमाणपत्र प्राप्त करते मुख्य प्रबंधक श्री नफे सिंह एवं राजभाषा अधिकारी श्री रूपकुमार।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति होशियारपुर द्वारा बैंक के अंचल कार्यालय होशियारपुर को वर्ष 2021–22 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। छायाचित्र में पुरस्कार प्राप्त करते हुए आंचलिक प्रबंधक होशियारपुर तथा राजभाषा अधिकारी।

भोपाल अंचल की अधीनस्थ शाखा जयेन्द्रगंज ग्वालियर को बैंक नराकास ग्वालियर द्वारा वित्तीय वर्ष 2021–22 के दौरान राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

बहुधा वातावरण में परिवर्तन से कहीं अधिक व्यक्ति के भीतर बदलाव की जरूरत होती है। – ए सी बेंसन

नराकास उपलब्धियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा कंपनियां), फरीदाबाद से हमारी शाखा अजरौंदा को वित्तीय वर्ष 2021–22 का 'प्रथम पुरस्कार' प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार शाखा श्रेणी के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रदान किया गया है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राँची द्वारा मुख्य शाखा राँची को राजभाषा कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2020–21 एवं वर्ष 2021–22 के लिए प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। चित्र में, राजभाषा शील्ड तथा प्रमाणपत्र प्राप्त करते शाखा प्रबंधक राँची।

वर्ष 2021 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के अनुपालन में नराकास स्तर पर उल्लेखनीय योगदान के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई–दुर्ग द्वारा बैंक की भिलाई के प्रभारी श्री आकाश सिंह को ''राजभाषा विशिष्ट सेवा सम्मान'' प्रदान किया गया।

सुमन कुमार

अच्छे स्वास्थ्य का महत्व

अक्सर कही जाने वाली प्रसिद्ध कहावत है कि "स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है"। यह हम सभी बहुत अच्छी तरह से जानते हैं कि अच्छा स्वास्थ्य हम सभी के लिए कितनी अधिक महत्वपूर्ण है। अच्छी फिटनेस हमें केवल बीमारियों से ही दूर नहीं रखती बल्कि हमें मानसिक तौर पर भी मजबूत बनाती है। अच्छी फिटनेस का मतलब केवल शारीरिक तौर पर ही फिट होना नहीं है बल्कि इसका संबंध हमारी मानसिक फिटनेस से भी है। अध्ययनों से यह साबित हुआ है कि जो लोग शारीरिक रूप से अधिक फिट और स्वस्थ होते हैं, वे आसानी से मन की स्थिति को नियंत्रित रख सकते हैं और वे लोग जीवन में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं। अच्छी फिटनेस हम सभी के जीवन में एक महत्वपूर्ण पहलू है। स्वस्थ और फिट लोग वास्तव में बहुत खुशी और शांति से अपने जीवन का आनंद लेते हैं जबकि एक अस्वस्थ व्यक्ति पूरी तरह से जीवन का आनंद नहीं ले सकता।

सरल शब्दों में स्वस्थ और फिट रहने का अर्थ है अपने शरीर की अच्छे से देखभाल करना। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है। मन और शरीर दोनों का अच्छा स्वास्थ्य जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक ऊर्जा स्तर को बनाए रखने में मदद करता है। हम सभी को अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए। हानिकारक पदार्थों के सेवन से अपने शरीर की रक्षा करना, नियमित व्यायाम करना, उचित भोजन करना और सोना कुछ ऐसे महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जो एक स्वस्थ जीवन शैली को परिभाषित करते हैं। फिट रहने से हम सुस्त, बेचौन या थके बिना अपनी गतिविधियों को करने में सक्षम होते हैं।

स्वास्थ्य और फिटनेस के बारे में महात्मा बुद्ध द्वारा यह कहा गया है कि "शरीर को स्वस्थ रखना हमारा प्रमुख कर्तव्य है अन्यथा हम अपने दिमाग को मजबूत और स्पष्ट नहीं रख पाएंगे"। अधिकतर आम लोग कभी भी स्वस्थ और फिट होने के महत्व को महसूस नहीं करते हैं। वे आम तौर पर अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को कम आंकते हैं क्योंकि वे इसके फायदे नहीं समझ पाते, केवल कुछ ही लोग अपने जीवन में इसका पूरी तरह से पालन करते हैं। स्वस्थ और फिट शरीर हमें शारीरिक और मानसिक शक्ति के साथ–साथ आत्मविश्वास भी प्रदान करता है जोकि किसी भी विकट परिस्थिति का सामना करने में हमारी मदद करता है। जैसा कि हम जानते हैं कि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, उसी प्रकार स्वास्थ्य और फिटनेस का भी कोई विकल्प नहीं है।

आजकल लोग अपनी भागदौड़ वाली और व्यस्त जीवन–शैली के कारण खुद को फिट और स्वस्थ रखने के लिए समय नहीं निकाल पाते। यह एक तथ्य है कि हमें स्वस्थ और फिट रहने के लिए अच्छा और स्वस्थ भोजना करना चाहिए। रोजाना नियमित रूप से

अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समझ, जीवन के दो सर्वोत्म वरदान हैं। – साइरस

शारीरिक व्यायाम करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जो आप अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं। अल्पावधि में, शारीरिक व्यायाम भूख को नियंत्रित करने, मूड को अच्छा करने और नींद में सुधार करने में बहुत मदद करता है जबकि लंबे समय के लिए यह हृदय रोग, स्ट्रोक, मधुमेह, अवसाद और कई कैंसर के जोखिम को भी कम करता है। व्यायाम के माध्यम से अपने हृदय गति को बढ़ाने और मांसपेशियों के खुलने से हमारे शरीर की लगभग हर प्रणाली को लाभ होता है और असंख्य तरीकों से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। आपको कितना व्यायाम करना चाहिए, यह कई कारकों पर निर्भर करता है, जैसे आपकी फिटनेस का वर्तमान स्तर, आपके फिटनेस लक्ष्य, आप किस प्रकार के व्यायाम करने की योजना बना रहे हैं आदि चीजें शामिल हैं।

स्वस्थ और फिट रहने के लिए हमें स्व–प्रेरित होने के साथ–साथ फिटनेस–शैली की गतिविधियों में भाग लेने की बहुत आवश्यकता है। स्वस्थ और निरोग जीवन शैली जीने के लिए फिट रहना हमारा प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। इसके लिए हमें घंटों जिम में व्यायाम करने की आवश्यकता नहीं है, बस दैनिक रूप से व्यायाम और थोड़ी मात्रा में स्वस्थ भोजन करना ही अच्छे स्वास्थ्य और फिटनेस को बनाए रखने के लिए पर्याप्त है। नियमित व्यायाम और स्वस्थ भोजन के अतिरिक्त अच्छी नींद लेना भी बहुत आवश्यक है। प्रत्येक रात कम से कम आठ घंटे की गुणवत्ता वाली नींद लेना हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है और हृदय संबंधी बीमारियों को रोकने में भी मदद करता है और साथ ही साथ मूड में भी सुधार करता है।

हम उस व्यक्ति को स्वस्थ और फिट कह सकते हैं जो शारीरिक और मानसिक रूप से भी फिट है। शारीरिक और मानसिक रूप से फिट लोग बीमारियों से बचे रहते हैं। हमारा शरीर एक मशीन की तरह है जिसे उचित रख–रखाव, देखभाल और चलने की आवश्यकता होती है। जो लोग नियमित व्यायाम नहीं करते या योगासन नहीं करते हैं उनके आसानी से बीमार पड़ने की संभावना बनी रहती है। हमारे कई आधुनिक रोग जैसे मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, मानसिक तनाव, गठिया, बवासीर आदि हमारी सुस्त जीवन शैली और आलस का परिणाम है। दैनिक शारीरिक व्यायाम करके उन्हें आसानी से जांचा और समाप्त किया जा सकता है। कम उम्र से ही बच्चों को शारीरिक फिटनेस और व्यायाम में ठीक प्रकार से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। शारीरिक फिटनेस से संबंधित प्रशिक्षण हमारे स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में दिया जाना चाहिए। शारीरिक फिटनेस हर किसी के लिए जरूरी है। शारीरिक श्रम और व्यायाम के प्रति प्रेम विकसित होना चाहिए। सुबह जल्दी उठकर शारीरिक व्यायाम करना सबसे अच्छा होता है। यह जानकार खुशी होती है कि हमारे स्कूलों और कॉलेजों में योगाभ्यास, मेडिटेशन आदि की शुरुआत हो चुकी है। योगाभ्यास और मेडिटेशन से हम अपने शरीर और मन दोनों का पूर्ण रूप से विकास कर सकते हैं।

बात करें यदि स्वास्थ्य संबंधी संगठनों की तो विश्व स्वास्थ्य संगठन एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संगठन है। यह विश्व के देशों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग एवं मानक विकसित करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना 07 अप्रैल, 1948 को की गई थी। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड के जेनेवा शहर में स्थित है। भारत भी विश्व स्वास्थ्य संगठन का एक सदस्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का मुख्य उद्देश्य संसार के सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य के उच्चतम संभव स्तर की प्राप्ति में सहायता प्रदान करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन को सर्वाधिक सफल संयुक्त राष्ट्र अभिकरणों में से एक माना जाता है। यह अंतरिम स्वास्थ्य कार्यों से संबंधित समन्वयकारी प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है तथा स्वास्थ्य मामलों में सक्रिय सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि शारीरिक फिटनेस अनिवार्य है और इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। स्वस्थ जीवन के लिए पोषण और फिटनेस आवश्यक है। इससे न केवल हम अच्छे दिखते हैं और अच्छा महसूस करते हैं, बल्कि सही पौष्टिक भोजन खाने और सही मात्रा में व्यायाम करने से, हम कुछ गंभीर जानलेवा बीमारियों के होने की संभावना को भी कम कर सकते हैं। सभी आयु वर्ग के लोगों खासकर युवा पीढ़ी के लोगों के लिए नियमित शारीरिक गतिविधियां और नियमित व्यायाम बहुत आवश्यक है। स्वास्थ्य और फिटनेस जीवन में खुशी लाते हैं और व्यक्ति को तनाव मुक्त और रोग मुक्त जीवन जीने में मदद करते हैं। यह उचित समय है कि हम राष्ट्रीय भौतिक मानकों को विकसित करने और बढ़ावा देने के लिए और अधिक ध्यान दें और अधिक से अधिक संसाधनों का उपयोग करें। हमें एक ऐसा सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना चाहिए जहां शरीर को मन से कम महत्व न दिया जाए क्योंकि शारीरिक शक्तियों के बिना कोई मानसिक शक्ति नहीं हो सकती। नियमित रूप से किए जाने वाला शारीरिक व्यायाम, मन और शरीर दोनों के लिए एक अद्भुत टॉनिक की तरह काम करता है।

अंचल कार्यालय गुरदासपुर

प्रदीप कुमार
रॉय

ମୂଳ ଉଡ଼ିୟା ଲେଖ

ଶିକ୍ଷା

ବର୍ଷକରେ ଛଅଟି ଋତୁ ତ ଆସେ; କିନ୍ତୁ ସେଥିରୁ ସାଧାରଣତଃ ଖରା, ବର୍ଷା ଓ ଶୀତ ମୁଖ୍ୟଭାବେ ପରିଚିତ ହୁଅନ୍ତି। ପ୍ରତ୍ୟେକ ଋତୁର ଆମ ଜୀବନରେ ଏକ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ମହତ୍ୱ ରହିଛି। କିନ୍ତୁ ସେମାନେ ହିଁ ଯେତେବେଳେ ଭୟଙ୍କର ରୂପ ଧାରଣ କରନ୍ତି, ସେତେବେଳେ ମଣିଷ ଅସହ୍ୟ ହୋଇପଡ଼େ। ସବୁ କିଛି କେଜାଣି କେମିତି ପାଲଟି ଯାଏ। ଠିକ ସେହି ପରି ଥିଲା ଏକ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ମାସ। ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ମାସର ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଖରା। ମୋର ଏମଏ ପରୀକ୍ଷା ଚାଲିଥାଏ।

ଦୁଇ ଦିନ ହେବ ତାପମାତ୍ରା ହଠାତ କ୍ରମାଗତ ଭାବେ ବଢି ଚାଲି ଥିଲା। ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଗୌଦ୍ର ତାପ ସହିତ ଉଷ୍ମ ପବନ ବହୁଥିବାରୁ ସାଧାରଣ ଜନ-ଜୀବନ ପ୍ରଭାବିତ ହେଉଥିଲା। ଲୋକମାନେ ଅସ୍ତବ୍ୟସ୍ତ ହୋଇ ପଡ଼ି ଥିଲେ। ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଉତ୍ତାପ ଯୋଗୁଁ ନିହାତି ଦରକାର ପଡ଼ିଲେ ହିଁ ଲୋକେ ଘରୁ ବାହାରୁ ଥିଲେ.. ଅବଶ୍ୟ ନିଜକୁ ଖରାରୁ ବଞ୍ଚାଇବା ପାଇଁ ବ୍ୟାପକ ବ୍ୟବସ୍ଥା ଅବଲମ୍ବନ କରି। ଜିଲା ପ୍ରସାଶନ ଦ୍ୱାରା ସ୍କୁଲ-କଲେଜ ସମୟରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଅଣା ଯାଇ ଥିଲା। ଛୋଟ ପିଲାମାନଙ୍କର ସ୍କୁଲ ଛୁଟିର ଘୋଷଣା କରା ଯାଇ ଥାଏ। ହେଲେ ପରୀକ୍ଷା ସମ୍ପର୍କିତ କୌଣସି ପରିବର୍ତ୍ତନର ନିର୍ଦ୍ଦେଶ ଦିଆ ଯାଇ ନଥିଲା।

ପରୀକ୍ଷା ସରିବା ସତ୍ତ୍ୱେ ସେହି ପ୍ରଚଣ୍ଡ ତାପରେ ବାହାରକୁ ପାଦ କାଢିବାକୁ ଇଚ୍ଛା ହେଲା ନାହିଁ। ଅବଶ୍ୟ ପରୀକ୍ଷା ହଲରେ ବି ବସିବାଟା କମ କଷ୍ଟକର ନଥିଲା। ତଥାପି ପରୀକ୍ଷାର ନିଶା ଗ୍ରୀଷ୍ମତାପକୁ ଅନୁଭବ କରାଇ ଦେଲା ନାହିଁ। ତିନି ଘଣ୍ଟା କେମିତି ଯେ ବିତିଗଲା ଜଣା ପଡିଲା ନାହିଁ। କିନ୍ତୁ ବାହାରକୁ ବାହାରିବା ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ମନେହେଲା ଯେମିତି ଏଠାରେ ମଣିଷ ଜଳି ଭସ୍ମ ହୋଇଯିବ। ଗେଟ ବାହାରେ ଠିଆହୋଇ ଚାରିଆଡ଼େ ନଜର ପକେଇଲି... ପ୍ରାୟ ଯେଉଁଠାରେ ରିକ୍ସାର ଗହଳ ଚହଳ ଥାଏ, ସେଠାରେ ଗୋଟିଏ ବି ରିକସା ନଜରକୁ ଆସୁନି। ପ୍ରାୟ ରାସ୍ତାର ଦୁଇ ପାଖ ଫୁଟପାଥ ଉପରେ ଓ ଛକ ଚାରିପଟେ ଅନେକ ଛୋଟ ବଡ଼ ଦୋକାନ ବସି ଥାଏ। ଦିନ ତମାମ ଯେଉଁଠି ଲୋକଙ୍କର ଗହଳି ଲାଗିରହୁଥିଲା ସେ ସବୁ ଜାଗା ଏବେ ଖାଁ ଖାଁ ଲାଗୁଛି। ପଶୁ-ପକ୍ଷୀ ମଧ୍ୟ ଦେଖାଯାଉ ନଥାନ୍ତି। ରାସ୍ତା ଉପରେ ଚାରିଆଡ଼େ ନିସ୍ତବ୍ଧତା ଘେରି ରହିଛି। କିଛି ସମୟ ଅପେକ୍ଷାରତ ପରେ ଦେଖିଲି ଦୂରରୁ ଗୋଟିଏ ରିକସା ଆସୁଛି। ହାତ ଠାରି ତାକୁ ପାଖକୁ ଡାକିଲି। ସେ ଯେତେ ପାଖକୁ ଆସିଲା ମୋ ବିସ୍ମୟର ସୀମା ସେତେ ବଢିଚାଲିଲା। ପ୍ରାୟ ସତୁରି ବର୍ଷର ବୁଢାଟିଏ.. ମୁଣ୍ଡରେ ଗାମୁଛାଟିଏ ବାନ୍ଧିଥାଏ.. ଦେହରେ ଥିବା ଅସ୍ଥିଗୁଡ଼ିକୁ ଗଣି ହୋଇଯାଉଥାଏ.. ହାତ ଥରୁଥାଏ.. ରିକସାର ହ୍ୟାଣ୍ଡେଲ ଦୁଇଟିକୁ ଧରିରଖିବାରେ ଅସମର୍ଥ। ମୋର ପାଦ ଆଗକୁ ବାହାରିଲାନାହିଁ ଯାଇ ତା ରିକ୍ସାରେ ବସିବା ପାଇଁ। ସେ ବାରମ୍ବାର ପଚାରିବାରେ ଲାଗିଥିଲା, "ମା, କୋଉଠି ଯିବ? ଚାରି ପାଞ୍ଚଥର ପଚାରିବା ପରେ ମୁଁ କହିଲି, "ନାହିଁ ଥାଉ, ମୁଁ ଚାଲିଯିବି।" ଏକ ଜର୍ଜର ବୟୋବୃଦ୍ଧ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ଠାରୁ ସେବା ନେବା ମତେ ଅସ୍ୱସ୍ତିକର ବୋଧ ହେଲା। ମୋ ବିବେକ ମତେ ବାଧା ଦେଲା।

"ଏଇ ଡହକ ଖରାରେ ତମେ କେମିତି ଯିବ, ମା? ରିକ୍ସାରେ ବସ ତମେ ଆରାମରେ ପହଞ୍ଚିଯିବ... ମୁଁ ମଧ୍ୟ ବି ପଇସା ପାଇଯିବି। ମୋ ଘର ଚଳିଯିବ। ଆଜି ଗୋଟେ ହେଲେ ଭଡ଼ା ମିଳିନି।" ତାର କଥାଶୁଣି ମୋ ହୃଦୟ ଦ୍ରବିତ ହୋଇ ଗଲା। ଅନିଚ୍ଛାସତ୍ତ୍ୱେ ଯାଇ ମୁଁ ତା ରିକ୍ସାରେ ବସି ପଡ଼ିଲି। ତା ଛଡ଼ା ମୋ ପାଖରେ କୌଣସି ବିକଳ୍ପ ନଥିଲା। ମୁଁହର ଝାଳତକ ପୋଛି ସେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ହେଲା ମତେ ଟାଣିନେବାପାଇଁ। ପାଟି ଓ ନାକରୁ ଗରମ ପବନ ବାହାରୁଥିଲା। ଲାଗୁଥିଲା ସତେଅବା ଶରୀର ଜଳି ଧୂଆଁ ବାହାରୁଛି। ମୁଁ ଭୟଭୀତ ହୋଇଗଲି। ତା ଅବସ୍ଥା ଦେଖି ଲାଗୁଥିଲା ଯେମିତି ଏହିକ୍ଷଣି ମୂର୍ଚ୍ଛା ହୋଇପଡ଼ିଯିବ। ବୁଢାର କଷ୍ଟ ଦେଖି ମୋ କଷ୍ଟ ମତେ ତୁଚ୍ଛ ମନେ ହେଲା।

"ଏ ବର୍ଷର ଖରା କି ପ୍ରବଳ, ସତୁରି ବର୍ଷର ମୋ ଜୀବନକାଳରେ ମୁଁ ଏହା କେବେ ଦେଖିନଥିଲି। ଲୋକେ ପୋକ ମାଛି ପରି ଜୀବନ ହାରୁଛନ୍ତି।" ସେ ବ୍ୟସ୍ତ ହେଇ ପଡ଼ିଥିଲା। ମୁଁ ରହିନପାରି କହିଲି, "କିନ୍ତୁ ତମେ ଏ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଖରାରେ କେମିତି ରିକସା ଟାଣୁଛ? ତୁମପରି ଲୋକତ ଘରେ ଆରାମ କରିବା କଥା।" ସେ ମୋ କଥାକୁ ଶୁଣି ଟିକିଏ ହସି କହିଲା, "ମୁଁ ଯଦି ଆରାମ କରିବି, ତେବେ କଣ ଭଗବାନ ଆସି ପେଟକୁ ଦାନା ଯୋଗାଇ ଯିବେ। ଆମ ରିକ୍ସାବାଲାଙ୍କ ଶରୀର ତ ଲୁହାରେ ତିଆରି। ତାକୁ ଶୀତ, ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଓ ବର୍ଷା ବାଧେନା। ଏବେ ଦେଖନା, ତମେ ଘରେ ଆରାମରେ ପହଞ୍ଚିଯିବ, ମୁଁ ମଧ୍ୟ ଟଙ୍କା କେତୋଟି ପାଇଯିବି। ଏଥିରେ ଉଭୟଙ୍କର ମଙ୍ଗଳ ହେବ।"

मनुष्य को अपनी कठिनाइयों की आवश्यकता होती है क्योंकि वे सफलता का आनंद लेने के लिए आवश्यक है। – ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

"ତଥାପି ଏହି ଖଇଫୁଟା ଖରାର ଧାସରେ କିଏ ରିକସା ଟାଣନ୍ତି କି? ଦେଖ, ରାସ୍ତା ଜନଶୂନ୍ୟ ହୋଇ ରହିଛି। ଜୀବନ ରହିଲେ ତ ଧନ କାମରେ ଆସିବ।" ମୋ କଥାକୁ ସମ୍ମତି ଜଣାଇ ସେ କହିଲା, "ଖରା ଭୟରେ ଯଦି ଘରେ ବସିବି ତେବେ ଆମେ ବଞ୍ଚିବୁ କେମିତି? ବୁଢୀକୁ ଟିବି, ତା ଅବସ୍ଥା ଭଲ ନାହିଁ। ବଞ୍ଚିବାର ଆଶା ନାହିଁ। ତେଣୁ ଯାହା ଅର୍ଜୁଛି ସବୁ ତାର ଔଷଧରେ ଖର୍ଚ୍ଚ କରି ଦେଉଛି। କାଳେ ବଞ୍ଚି ଯିବ। ପ୍ରଭୁ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଇଚ୍ଛା!" ତାର ଏହି କଥା ଶୁଣି ବେଶୀ କିଛି ପଚାରିବାକୁ ମନ ଗଲାନି। ଘର ବି ନିକଟକୁ ଆସିଯାଇଥିଲା। ପର୍ସରୁ

ପାଞ୍ଚ ଶହ ଟଙ୍କାର ନୋଟ ବାହାର କରି ତା ଆଡ଼କୁ ବଢାଇ ଦେଲି। ତା ପରିସ୍ଥିତିକୁ ଧ୍ୟାନରେ ରଖି କହିଲି, "ସବୁ ଯାକ ରଖ, ତମ କାମରେ ଲାଗିବ।" ତାକୁ କିଛି ସାହାଯ୍ୟ କରିବାକୁ ଚାହିଁଥିଲି। କିନ୍ତୁ ସେ ଯେ ଜଣେ ସଚ୍ଚୋଟ ମଣିଷ! ତା ପାଖରେ ରେଜାନଥିଲା। କହିଲା, "ଥାଉ ମା। ପାଖ ଦୋକାନଗୁଡିକ ବନ୍ଦ ରହିଛି, ନହେଲେ ଖୁଚୁରା ମିଳି ଯା'ନ୍ତା। ଏତେ ଟଙ୍କା ଏବେ ମୁଁ କୋଉଠି ରଖିବି? ତମେ ରଖିଥାଅ। ଭଡ଼ା ପଇସା ମୁଁ ପରେ ନେଇନେବି। ଘର ତ ଦେଖିସାରିଛି। ଆସି ନେଇଯିବି।" ମନେ ମନେ ଭାବିଲି, "ସେ ନିଜେ କହୁଥିଲା, ତାକୁ ତ ଆଜି କୌଣସି ଯାତ୍ରୀ ମିଳିନାହିଁ। ତେବେ ସେ ଚଳିବ କେମିତି?" ତା ସଚ୍ଚୋଟପଣକୁ ଯଥେଷ୍ଟ ସମ୍ମାନ ଦେଇ ବାଧ କଲି, "ହେଲା ହେଲା.. ଖରା ମାଡ଼ି ଆସିଲାଣି, ଟଙ୍କାତକ ନେଇ ଏବେ ଘରକୁ ଯାଅ। ବଳକା ଟଙ୍କା ପରେ ଦେଇଦେବ। କଲେଜ ପାଖରେ ତ ରୁହ ନା?" ମୁଁ ସେ ଖରାରେ ବକେୟା ପଇସା ପାଇଁ ଦଣ୍ଡେ ବି ଅପେକ୍ଷା କରିବା ପାଇଁ ପ୍ରସ୍ତୁତ ନଥିଲି। ଅସହ୍ୟ ତାପରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ ସେ ଟଙ୍କାଗୁଡ଼ିକ ମୋ ପାଇଁ ମୂଲ୍ୟହୀନ ଥିଲା।

"ହଁ ମା, କଲେଜ ପାଖରେ ରହିଲେ ହିଁ ଭଲ ପଇସା ମିଳେ। ଛକ ଜାଗା ତ! ହୁଏତ କାଲି ସେଇଠି ମୁଁ ଟଙ୍କାତକ ଦେଇ ଦେବି।" ଏହା କହି ସେ ଚାଲିଗଲା। ମୁଁ ସ୍ପଷ୍ଟ ଦେଖିଥିଲି, ଭାବ ବିହ୍ୱଳ ହୋଇ ଜକେଇ ଆସିଥିଲା ତାର ଦୁଇ ଆଖି। କାହିଁକି କେଜାଣି, ମୋ ଆଖିରୁ ଅଦୃଶ୍ୟ ହେବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାକୁ ଚାହିଁ ରହିବି ବୋଲି ଇଚ୍ଛା କଲି, କିନ୍ତୁ ଅତ୍ୟଧିକ ଖରା ଯୋଗୁଁ ଏହା ସମ୍ଭବ ହୋଇ ପାରିଲା ନାହିଁ। ଭାବିଲି, ମୁଁ ମୋ ଲକ୍ଷ୍ୟରେ ତ ପହଞ୍ଚିଗଲି। ସେ ତା ଲକ୍ଷ୍ୟରେ କେତେବେଳେ ପହଞ୍ଚିବ କେଜାଣି। ମୁଁ ଏସୀରେ ଆରାମ କରିବି ଆଉ ସେ ପ୍ରଚଣ୍ଡ ଖରାରେ ଯାତ୍ରୀଙ୍କ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ବୁଲୁଥିବ। ସତରେ ସେ ଠିକ କହୁଥିଲା, ତା ଶରୀର ତ ଲୁହାର ତିଆରି।

ଦୁଇଦିନ ପରେ ପରୀକ୍ଷା ଥିଲା। ସେ ଦିନ ହେଲେ ପରୀକ୍ଷା ସାରି ପୁଣି ଅପେକ୍ଷା କଲି ଗେଟ ବାହାରେ। ପୂର୍ବଦିନ ପରି ଖରା ପ୍ରଚଣ୍ଡ। କିଏ ଆସୁ ନ ଆସୁ, ସେ ବୁଢାଟିଏ ନିଶ୍ଚିତ ଆସିବ। ମୁଁ ସେହି ବୃଦ୍ଧ ରିକ୍ସାବାଲାକୁ ଖୋଜୁ ଥାଏ। କିନ୍ତୁ ସେ ଆସିଲା ନାହିଁ। ପୁଣି ଦୁଇଦିନ ଏମିତି ଚାଲିଗଲା। ମୁଁ ଚିନ୍ତିତ ହୋଇ ପଡ଼ିଲି। ବୁଢିର ଅବସ୍ଥା କଣ ବେଶୀ ଖରାପ ହୋଇ ଗଲା? ତାର କିଛି ଅସୁବିଧା ହେଇନି ତ? ନା ଅଳ୍ପ କିଛି ଟଙ୍କା ପାଇଁ ସେ ତାର ବିଶ୍ୱାସ ହରାଇଦେଲା। ମନରେ ଅନେକ ପ୍ରଶ୍ନ ଆସିଲା। ଟଙ୍କା ଫେରାଇବାର ଇଚ୍ଛା ଥିଲେ ତ ଘରକୁ ଆସି ପାରିଥାନ୍ତା, ତାକୁ ଘର ଜଣା ଥିଲା। ମୁଁ ଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱରେ ପଡ଼ିଗଲି। ମନରେ ତା ପ୍ରତି ଅସନ୍ତୋଷର ଭାବନା ଆସିଗଲା। ନିମେଷମାତ୍ରେ ମନରେ ଥିବା ତା ପ୍ରତି ସବୁ ଦୟା ଆଉ ବିକଳତା ନଷ୍ଟ ହୋଇଗଲା। ତା ପ୍ରତି ବୋଉର ଆକ୍ଷେପ ଠିକ ଲାଗିଲା। ସତରେ କଣ ବୁଢାଟା ଠକ ବାହାରିଲା? ଶେଷରେ ନିରାଶ ହୋଇ ବିରକ୍ତ ଭାବ ନେଇ ଏକମୁଁହା ହୋଇ ଘରେ ପଶିଲି। ବୋଉ ମୋ ଅପେକ୍ଷାରେ ବସି ଥିଲା। ଖାଇବାକୁ ବାଢି ଡାକିଲା, ଇଚ୍ଛାନଥାଇ ବି ଯାଇ ବସିଲି ଥାଳି ପାଖରେ। ଗୋଟିଏ ଗୁଣ୍ଡା ପାଟିକି ନେଇଛି କି ନାହିଁ ବୋଉ କିଛି ମନେ ପଡ଼ିଗଲାପରି କହିଲା, "ଆରେ ତତେ କହିବାକୁ ଭୁଲିଗଲି। ଗୋଟିଏ ରିକ୍ସାବାଲା ଆସି ଚାରି ସହ ଅଶୀ ଟଙ୍କା ଦେଇଗଲା।"

"ଆଚ୍ଛା, ସେ ବୁଢାଟିଏ ଆସିଥିଲା.. ?" ମୁଁ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହୋଇ ପଚାରିଲି।

"ଆରେ ନାହିଁ, ଅନ୍ୟ ଜଣେ କିଏ ଆସିଥିଲା, କମ ବୟସର ଲୋକଟିଏ। ତରତରରେ ମୁଁ କିଛି ପଚାରି ପାରିଲିନି।" ବୋଉ ଠାରୁ ଏହା ସବୁ ଶୁଣି ମୁଁ କଷ୍ଟ ପାଇଲି। ମୁଁ ତ ଅକାରଣେ ତାକୁ ଦୋଷାରୋପ କରି ବସିଥିଲି।

ପରେ ଅନ୍ୟ ଜଣ ରିକସାବାଲା ଠାରୁ ଜାଣିଲି। ଅନୁମାନ କଲି। ସେଦିନର ଘଟଣା.. ଉଦୁଉଦିଆ ଖରାରେ ଯେଉଁଦିନ ସେ ବୁଢା ମତେ ଘରେ ଛାଡ଼ିଥିଲା। ମତେ ଛାଡ଼ି ଅଳ୍ପ କିଛି ବାଟରେ ସେ ଅଜ୍ଞାନ ହୋଇ ରାସ୍ତା ଉପରେ ପଡ଼ିଗଲା। ଲୋକମାନେ ତାକୁ ଡାକ୍ତରଖାନା ନେଇଗଲେ। ଡାକ୍ତରଖାନାରୁ ଘରକୁ ନେବାର ଦୁଇ ଦିନ ପରେ ତାର ପ୍ରାଣବାୟୁ ଉଡ଼ିଗଲା। ଜନୈକ ରିକସାବାଲା ସାଙ୍ଗକୁ ସେ ବକେୟା ଚାରି ସହ ଅଶୀ ଟଙ୍କା ଦେଇଯାଇଥିଲା ମତେ ଫେରାଇବାପାଇଁ। ବୋଉ ପାଖକୁ ବୋଧେ ସେଇ ଲୋକଟି ଆସି ଥିଲା। ମୁଁ ଅବାକ ହୋଇଗଲି। ଯେଉଁ ଟଙ୍କା ପାଇଁ ମୁଁ ତାକୁ ମନେ ମନେ କେତେ ଗାଳି କରିଥିଲି, ସେଇ ଟଙ୍କାକୁ ସେ ପ୍ରାଣ ହରାଇ ବସିବା ସମୟରେ ବି ମନେ ରଖି ମତେ ଫେରାଇ ଦେବାପାଇଁ କହିଥିଲା। ଯାହାକୁ ମୁଁ ଠକ ବୋଲି କହିଥିଲି, ଯାଉ ଯାଉ ସେ ମତେ ସଚ୍ଚୋଟତାର ଶିକ୍ଷା ଦେଇଗଲା।

ଅଜାଣତରେ ରେ ମୋ ଆଖିରୁ ଦୁଇ ଟୋପା ଲୁହ ଗଡ଼ିଆସିଥିଲା। ଭାବିଲି, ବୁଢାର ମୃତ୍ୟୁପରେ ବୁଢିର ଅବସ୍ଥା କଣ ହୋଇଥିବ। ସତରେ ମରିବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମଣିଷର ସଂଘର୍ଷରେ ପୂର୍ଣ୍ଣଚ୍ଛେଦ ପଡ଼େନାହିଁ। ଅନ୍ୟର ଦୁଃଖକୁ ଦେଖି ଆମେ ଦୁଃଖୀ ହେଲେ ମଧ୍ୟ "ଆହା.. " କରିବା ଛଡ଼ା ବା ସହାନୁଭୂତି ଦର୍ଶାଇବା ଛଡ଼ା କିଛି କରିପାରୁନାହୁଁ। କାଳକ୍ରମେ ଆମେ ସବୁକିଛି ଭୁଲି ଯାଇଥାଉ। ତେଣୁ ମୁଁ ବି ଧୀରେ ଧୀରେ ସେ ଘଟଣାକୁ ଭୁଲିଗଲି।

प्रदीप कुमार रॉय

सीख

मूल उड़िया लेख का हिंदी अनुवाद

साल में छः ऋतुएं होती हैं जिनमें साधारणतया सर्दी, गर्मी व बरसात ही मुख्य रूप से परिचित हैं। हरेक ऋतु का हमारे जीवन में अपना एक अलग महत्व है लेकिन जब ये ऋतुएं ही भयंकर रूप धारण कर लेती हैं, तब मनुष्य असह्य हो जाता है। सबकुछ कैसे बदल जाता है। ठीक वैसा ही था ग्रीष्म का एक महीना। जेठ की तीखी धूप। मेरी एमए की परीक्षाएं चल रही थी।

पिछले दो दिनों से अचानक तापमान में लगातार वृद्धि हो रही थी। सूरज की तपिश और चल रही उष्ण हवा ने लोगों का हाल बेहाल कर रखा था। लोगबाग अस्त–व्यस्त हो गए थे। झुलसाती तेज धूप की वजह से बहुत जरूरी पड़ने पर ही लोग बाहर निकल रहे थे.. अवश्य ही अपने को धूप से बचाने के पुख्ता इंतजाम के साथ। जिला प्रसाशन के द्वारा स्कूल–कॉलेज के समय में बदलाव के निर्देश जारी किए गए थे। छोटे बच्चों के स्कूल की छुट्टियाँ घोषित कर दी गई थीं पर परीक्षाओं में बदलाव के कोई निर्देश नहीं..।

परीक्षा खत्म होने पर भी प्रचंड गर्मी के चलते बाहर निकलने का मन नहीं हो रहा था। अवश्य ही, परीक्षा–हॉल में बैठे रहना भी कम तकलीफदेह नहीं था फिर भी परीक्षा के उन्माद ने ग्रीष्म के ताप को महसूस नहीं करने दिया। तीन घंटे कैसे बीते पता ही नहीं चला लेकिन बाहर निकलने पर ऐसा लगा कि मानो सारा शरीर जल कर भस्म हो जाएगा। बाहर खड़े हो कर चारों ओर नजर दौड़ाई... अक्सर जहां रिक्शे की चहल–पहल रहती थी वहाँ एक भी रिक्शा नजर नहीं आया। अमूमन यहाँ सड़क के दोनों तरफ फुटपाथ के ऊपर तथा चौक के चारों ओर कई छोटी बड़ी दुकानें लगा करती थी। दिनभर लोगों की भीड़ लगी रहती थी। वहाँ अब सुनसान है। पशु–पक्षी भी नदारद हैं। सड़कों पर सन्नाटा पसरा है। थोड़ी देर इंतजार करने के बाद दूर से एक रिक्शा को आते देखा। इशारे से उसे पास बुलाया। वह जितना ही करीब आ रहा था मेरी आश्चर्य की सीमा उतनी ही बढ़ रही थी। लगभग सत्तर साल का एक जर्जर वृद्ध, सिर पर गमछे वाली पगड़ी... शरीर की अस्थियाँ बाहर उभरी

हुई.. काँपते हाथ.. हाथ हैन्डल को थामने में असमर्थ। चाहते हुए भी मेरे पाँव रिक्शा की ओर बढ़ने के लिए तैयार नहीं थे। वह लगातार पूछता जा रहा था, "बेटी! कहाँ जाना है?" चार–पाँच बार पूछने के बाद मैंने कहा, "नहीं–नहीं, मैं चली जाऊँगी।" एक जर्जर वयोवृद्ध व्यक्ति से सेवा लेना मुझे असहज लगा। मेरे विवेक के विरुद्ध था।

"इस कड़ाके की धूप में तुम कैसे जाओगी, बेटी? रिक्शे पर आ जाओ, तुम आराम से पहुँच जाओगी.. मुझे भी दो पैसे मिल जाएंगे। घर का खर्चा निकल जाएगा। अब तक कोई सवारी नहीं मिली।" उसकी बातों से मेरा दिल पसीज गया। न चाहते हुए भी मैं उसके रिक्शे पर सवार हो गया। इसके अलावा मेरे पास कोई विकल्प भी तो नहीं था। चेहरे से पसीना पोंछ कर रिक्शा खींचने के लिए वह तैयार हो गया। उसकी साँस धौंकनी की तरह चल रही थी। ऐसा लगा मानो शरीर जलकर धुआँ छोड़ रहा है। मैं भयातुर हो गई। इस गर्मी में वह कहीं मूर्छित न हो जाए। बूढ़े की हालत देखकर मुझे अपनी परेशानी तुच्छ लग रही थी।

"इस साल की गर्मी बेहद खतरनाक है। सत्तर साल की मेरी उम्र में मैंने ऐसी गर्मी नहीं देखी। लोग कीड़े–मकोड़े की तरह मर रहे हैं।" उसने चिंता जताई। मुझसे चुप नहीं रहा गया। पूछा, "बाबा, इतनी असह्य गर्मी में तुम रिक्शा क्यों खींचते हो? तुम जैसों को घर पर

तैयारी करने में असफल होने से, आप असफल होने की तैयारी कर रहे हैं। – बेंजामिन फ्रैंकलिन

आराम करना चाहिए।" उसने मुस्कुरा कर कहा, "मैं आराम करने लगूँ तो पेट में दाना क्या भगवान देंगे। हम रिक्शेवालों का शरीर तो फौलाद का बना होता है.. सर्दी, गर्मी और बरसात का कोई असर नहीं पड़ता। अब देखो, तुम आराम से घर पहुँच जाओगी और मुझे कुछ पैसे मिल जाएंगे। इसमें दोनों की भलाई होगी।"

"फिर भी इस चिलचिलाती धूप में कोई रिक्शा नहीं चलाता। देखो, सड़क कितना सूनसान है। जान रहेगी तो ही धन काम आएगा।" मेरी बातों पर सहमति जताते हुए उसने कहा, "धूप से डरके अगर घर पर बैठ जाएं तो जिंदा कैसे रहेंगे? बूढ़ी को टीबी है, उसकी हालत ठीक नहीं है। बचने की उम्मीद कम है। जो भी कमाता हूँ दवा–दारू में लगा देता हूँ। शायद ठीक हो जाए। प्रभु जगन्नाथ की इच्छा!" ऐसे में और कुछ पूछना मैंने ठीक नहीं समझा। घर के करीब पहुँच गए थे। पर्स से पाँच सौ रुपए का नोट निकाल कर बढ़ा दिया और उसकी परिस्थिति को ध्यान में रखकर कहा, "बाकी के पैसे भी रख लो, तुम्हारे काम आएगा।" उसकी सहायता करना चाहा। पर वह तो एक खुद्दार ठहरा! उसके पास रेजगारी नहीं थी। उसने कहा, "नहीं बेटी, रहने दो। पास की दूकानें भी बंद हैं, नहीं तो खुला करवा लेता। इतने रुपये मैं कहाँ रखूँगा? इसे रख लो। किराये के पैसे मैं बाद में ले लूँगा। मकान तो देख लिया न। खुद लेने आ जाऊंगा।" मन ही मन सोचा, "उसने ही तो कहा था, आज उसे कोई सवारी नहीं मिली। फिर उसका गुजारा कैसे निकलेगा।" मैंने उसकी खुद्दारी को यथेष्ट सम्मान देते हुए बाध्य किया, "ठीक है ठीक है.. धूप तेज हो रही है। अब रुपये लेकर घर चले जाओ। बाकी के रुपए बाद में दे देना, कॉलेज के पास ही रहते हो न?" मैं उस गर्मी में पैसों के लिए तनिक भी इंतजार करना नहीं चाहती थी। असह्य गर्मी से निजात पाने के लिए मेरे लिए तब वे रुपए मूल्यहीन लग रहे थे। उसने झिझकते हुए पैसे रख लिए।

"हाँ बेटी, कॉलेज के पास रहने पर अच्छा किराया मिल जाता है। चौक भी पास ही है। हो सके तो कल वहीं तुम्हें पैसे दे दूंगा।" ऐसा कहते हुए वह वहाँ से चला गया। मैंने स्पष्ट देखा, भाव–विह्वलता से उसकी दोनों आँखें पसीज गए थे। पता नहीं क्यों, मेरी आँखों से ओझल होने तक मैं उसे देखते रहना चाहती थी, पर अत्यधिक धूप के कारण ऐसा नहीं हो पाया। सोचा, मैं तो अपने लक्ष्य पर पहुँच गई। न जाने उसे अपना लक्ष्य कब प्राप्त होगा? मैं एसी में आराम करूंगी और वह मुसाफिरों की तलाश में कड़ाके की धूप में घूमता फिरेगा। सचमुच उसने ठीक ही कहा है, वह फौलाद का बना है।

दो दिन के बाद परीक्षा थी। उस दिन भी बाहर निकलकर रिक्शे की प्रतीक्षा में गेट के पास खड़ी रही। धूप पूर्ववत प्रखर थी। कोई मिले न मिले, वह बूढ़ा तो अवश्य आएगा। मैं उसी वृद्ध रिक्शेवाले की तलाश में थी लेकिन वह नहीं आया। अगले दो दिन भी वह नहीं मिला। मैं सोच में पड़ गई। क्या बुढ़िया की हालत खराब हो गई? कहीं उसे कुछ हो तो नहीं गया? या थोड़े से रुपयों के लिए उसने अपना ईमान खो दिया। मन में तरह तरह के सवाल आने लगे। पैसे वापस करना होता तो वह घर पर आ सकता था, उसने घर देख ही रखा था। मैं असमंजस में पड़ गई। मन ही मन बूढ़े के प्रति कहीं असंतोष की भावना जागृत हुई। पल भर में उसके प्रति सभी संवेदनाएं काफूर हो गई। उसके प्रति माँ की टिप्पणी सटीक लगी। क्या सचमुच बूढ़ा ठग निकला? आखिर निराश मन से घर की ओर पैदल चली गई। माँ मेरे इंतजार में बैठी थी। मेरे पहुंचते ही खाना परोसा। इच्छा न होते हुए भी खाने की थाली के पास बैठ गई। एक निवाला लिया ही था कि माँ ने कुछ याद करते हुए कहा, "अरे तुम्हें कहना भूल गई। एक रिक्शावाला आया था, चार सौ अस्सी रुपए दे गया।"

"अच्छा, वह बूढ़ा आया था.." मैंने चौंक कर पूछा।

"अरे नहीं, कोई और आया था, कम उम्र का था। हड़बड़ी में मैं कुछ पूछ ही नहीं पाई।" माँ से सब कुछ सुनने के बाद मुझे तकलीफ हुई। मैं तो बेवजह उसे गलत समझ बैठी थी।

बाद में किसी रिक्शेवाले ने बताया। अनुमान लगाया। वह उस दिन की बात थी जब चिलचिलाती दुपहरी में उसने मुझे घर पर छोड़ा था। मुझे छोड़कर जाने के कुछ ही दूर पर वह बेहोश हो कर रास्ते पर गिर पड़ा। लोग उसे अस्पताल ले गए। अस्पताल से घर ले जाने के दो दिन बाद ही वह सिधार गया। किसी रिक्शेवाले साथी को बकाया वापस करने के लिए वह चार सौ अस्सी रुपये दे गया था। माँ के पास शायद वही गया था। मैं चकित रह गई। जिस रुपए के लिए मैंने मन ही मन उसे कोसा था, मौत के मुँह में जाते–जाते उसने उन रुपयों को वापस करने की बात याद रखी जिसे मैंने ठग समझा, जाते–जाते वह ईमानदारी की एक बड़ी सीख दे गया।

अनजाने में मेरी आँखों से दो बूंद आँसू लुढ़क गए। सोचा, बूढ़े की मौत के बाद उसके बूढ़ी पत्नी की हालत क्या हुई होगी? सचमुच मरते दम तक मनुष्य के संघर्ष का पूर्णविराम नहीं होता। दूसरे के दुःख से दुःखी होते हुए भी आहा करने के अलावा तथा सहानुभूति जताने के सिवा हम कुछ भी तो नहीं कर पाते। समय के साथ साथ हम सब कुछ भूल जाते हैं। लिहाजा मैं भी उस घटना को धीरे–धीरे भूल गई। ''

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

पवन कुमार जैन

कुत्तों की कुत्ताइयत

गली के बाहर कुत्तों के भौंकने की आवाज अब काफी तेज होने लगी थी। सब तरफ से कुत्ते इकट्ठे हो गए थे और न जाने किसे ललकार रहे थे। तभी गली के दूसरे किनारे से भी कुत्तों के दूसरे झुँड ने भी जरा दबंगई से ललकारना शुरू कर दिया और अपनी अभिव्यक्ति की आजादी का भरपूर फायदा उठाने लगे। ऐसा लग रहा था कि आक्रमण के पहले का वार्मअप सेशन चल रहा है। दोनों पक्षों की आवाजों को उनकी तरह सोचते हुए जरा बारीकी से सुनने पर अब कुछ–कुछ समझ में आने लगा। इतना तो तय लग रहा था कि उनका मसला किसी जायदाद या इलाकाई हक के लिए नहीं था। मसला कुछ अलग तरह का ही था। वास्तव में इस तरफ के किसी मरदाना कुत्ते ने उस तरफ के किसी जनाना कुत्ते को छेड़ दिया था और लफड़ा करने की भी कोशिश की थी। इससे दूसरे पक्ष में काफी तनाव व्याप्त हो गया था, उनकी जमात की महापंचायत ने यह फैसला किया कि अपराधी कुत्ते को किसी आड़े–तिरछे वक्त घेर लिया जाए और इस दुस्साहस की जबरदस्त सजा दी जाए। देखते–देखते मामला अब काफी तूल पकड़ चुका था और नौबत हाथापाई तक पहुँच गई थी। मगर जाने क्यूँ अभी वे केवल गाली–गलौच से ही काम चला रहे थे। शायद उन्हें नाटो टाइप के किसी बाहरी संगठन से मदद की आशा थी। इसलिए वे केवल मौखिक आरोप–प्रत्यारोप तक ही अपने को सीमित किए हुए थे। अभियुक्त मरदाने कुत्ते को मोहल्ले से बाहर जाने की इजाजत नहीं थी। बुजुर्ग मरदाना और जनाना कुत्ते हालाँकि समझाने की कोशिश में लगे थे कि किसी तरह मामले को रफा–दफा कर दिया जाए और इसे ज्यादा तूल न दिया जाए। मगर कुछ उत्साही और नौजवान कुत्ते उनकी बात समझने को बिल्कुल तैयार नहीं थे और आज वे दो–दो हाथ करके अगला–पिछला सारा हिसाब–किताब कर लेना चाहते थे। उनकी आवाजों से तो कभी–कभी लगता था कि आक्रमण होने ही वाला है।

नौजवान कुत्ते एक–दूसरे को ललकारते हुए कुछ अनाप–शनाप भी

बक रहे थे। एक कुत्ते ने तो काफी भद्दी सी गालियाँ निकालते हुए कहा – "साले आदमी के बच्चे मैं तेरा खून पी जाऊँगा"। दूसरी तरफ वाला भी कहाँ कम था, उसने भी गाली का जवाब गाली से देते हुए मगर समझाते हुए कहा–"कुत्ते हो तो कुत्ते बने रहो, आदमी जैसी हरकतें करोगे तो चीर–फाड़ दिए जाओगे। ज्यादा आदमी बनने की कोशिश न करो। अपनी कुत्ताइयत की हद में रहो"। मैंने देखा कि उनमें से एक कुत्ता दुम–दबाकर कोने में खड़ा हुआ था और कुछ नहीं बोल रहा था, उसके हाव–भाव और डर से तो मुझे लगा कि छेड़–छाड़ की हरकत इसी कुत्ते ने की होगी और इसकी वजह से ही दो गुटों में बवाल मचा हुआ था। मैं चबूतरे पर बैठकर इस पूरी कार्रवाई की रिपोर्टिंग ले ही रहा था कि अंदर से अम्मा ने ललकारते हुए कहा – "बाहर बैठे–बैठे काहे दुम हिला रहे हो जरा देखो आज कुकुरवन का बियाह हो रहा है क्या?" अब अम्मा को कौन समझाए कि बियाह होने में ही तो अड़चन हो रही है। मामला बातचीत की बजाए फौजदारी तक पहुँच चुका है। हर तरफ मिसाइलें तैनात हो चुकी हैं। मामला सुलटने का नाम नहीं ले रहा है। मैंने अम्मा को बताया कि– "अम्मा तुमको तो हमेशा शादी –

बियाह की ही सूझती रहिती है, यह मसला लिव इन रिलेशनशिप का है"।

अचानक जाने क्या हुआ कि आवाजों का शोर कुछ थमने लगा। कर्कश आवाजों के सुर कुछ ढीले पड़ने लगे थे। लगता है किसी बुजुर्ग कुत्ते ने हालात की गंभीरता को देखते हुए कूटनीति का सहारा लेते हुए हस्तक्षेप करके बीच–बचाव कर दिया था ... यह बात तो माननी पड़ेगी कि आदमियों से ज्यादा समझ कुत्तों में होती है जिन्होंने जरा सी बात को ज्यादा तूल नहीं दिया और तमाम जान–माल के नुकसान से बच गए वरना नाटो जैसी फितरत के कुत्तों ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी। नौजवान कुत्ता इस मसले को समझ चुका था और अब उसके चेहरे पर भी खुशी की लहर दिखने लगी थी। उसने अपनी दुम को भी अंदर से निकालकर लगभग पूरी तरह से खड़ी कर ली और अपनी जमात वालों के साथ आकर रौब के साथ खड़ा हो गया।

दोस्तों! दुनिया में कुत्ता ही एक ऐसा प्राणी होता है जिसे सबसे ज्यादा इज्जत मिलती है और सबसे ज्यादा दुत्कार भी मिलती है हालाँकि कहा जाता है कि कुत्ता बहुत ही समझदार और वफादार जानवर होता है, मगर इनकी सबसे ज्यादा फजीहत बालीवुड वालों ने की है, वह बात–बात में कुत्तों को घसीटकर ले आते हैं। उनके डायलाग भी बस एक ही तरह के होते हैं "कुत्ते कमीने मैं तेरा खून पी जाऊँगा। कुत्ते के पिल्लों अपने–अपने हथियार डाल दो वरना गोलियों से भूनकर रख दिया जाएगा"। मेरी तो इन कुत्तों की जमात वालों को सलाह है कि वे इन बालीवुड वालों के खिलाफ अखिल भारतीय आंदोलन और धरना प्रदर्शन शुरू कर दें। यदि इसमें इन्हें कोई अड़चन नजर आए या कोई समस्या समझ में आए तो धरना–प्रदर्शन करने वालों से सलाह–मश्विरा भी कर सकते हैं। आजकल इसके एक्सपर्टाइज आसानी से मिल सकते हैं। आखिर कुत्तों की भी कोई इज्जत होती है। कुछ ही दिनों में बालीवुड वाले घुटनों पर आ जाएँगे और उन्हें अगला–पिछला हिसाब चुकाना पड़ेगा।

दोस्तो! कुत्ता पालने वाले या पालने वालियाँ

अपने कुत्तों को अपने बच्चों से ज्यादा प्यार करते हैं। उनके खाने–पीने से लेकर हर चीज का जबरदस्त ख्याल रखते हैं। हमारे घर के ठीक बगल में एक कर्मकांडी पंडितजी रहा करते थे। पूजा–पाठ करना उनका काम था। उसी समय मोहल्ले में एक गुप्ताजी का परिवार भी आकर रहने लगा। एक दिन गुप्ताजी, पंडित जी की बैठक में अपने कुत्ते को गोद में लिए हुए आ गए और पंडित जी के चरण स्पर्श किया। पंडितजी ने श्वान प्रवेश को अपशकुन समझते हुए नाक–भौं तो सिकोड़ा परंतु संकोचवश कुछ न कह पाए। गुप्ताजी ने कहा कि पंडितजी मैं अपने प्रिय का नामकरण करना चाहता हूँ। किस शब्द से नाम रखा जाए। पंडितजी ने जन्मतिथि और समय पूछा तो गुप्ताजी ने तिथि तो बता दी मगर समय पर अचकचा गए। पंडितजी ने पत्रा के पन्ने पलटे और बताया कि 'प' से नाम रख दें शुभ रहेगा। गुप्ताजी ने कहा कि पंडितजी 'पीटर' नाम कैसा रहेगा? पंडितजी ने कहा कि पुत्र को भी ले आते तो लगे हाथों आशीर्वाद दे देते, गुप्ताजी ने अपने कुत्ते को सहलाया और उसको चूमते हुए कहा कि – पंडितजी यही हमारा पुत्र है। हम इसे अपनी जान से ज्यादा चाहते हैं। पंडितजी की त्यौरियाँ चढ़ गईं और उन्होंने बिना दक्षिणा लिए हुए ही उन्हें भगा दिया।

दोस्तो.. मैंने देखा है कि विशेष रूप से शहर के कुत्ते नियमों का कभी भी उल्लंघन नहीं करते। वक्त और हालात के स्कूल में उन्होंने एक अच्छे शहरी होने की तालीम हासिल कर ली होती है। हम और आप अक्सर ट्रैफिक रूल्स को तोड़कर निकल जाते हैं। मगर मैंने कुत्तों को चौराहों पर जेब्रा लाईन से ही सड़क क्रास करते हुए देखा है, दोनों तरफ के ट्रैफिक को देखकर और फिर अपनी पूँछ का एंटीना खड़ा करके बड़ी तमीज के साथ सड़क पार करते हैं। दोस्तो, हम इंसानों के बीच में रहकर इंसानियत को तो महफूज नहीं रख पाए। मगर यदि कुत्तों से ही कुछ कुत्ताइयत के सबक पढ लें तो बेहतर इंसान साबित हो सकते हैं।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

हमें इन पर गर्व है!

"एक श्रेष्ठ व्यक्ति वही होता है जो मानवता का ख्याल रखता है और निःस्वार्थ भाव से दूसरों की मदद के लिए हाजिर रहता है, इस धरा पर यदि किसी को आपकी मदद की जरूरत हो तो जरूर करनी चाहिए क्योंकि मानवता ही है जो एक देश को श्रेष्ठ बनाती है और वह व्यक्ति जीवन में सबसे ज्यादा खुश रहता है, जो इंसानियत के नाते सबकी सहायता करता है "

आज हम जिस सच्ची घटना का जिक्र आपसे करने जा रहे हैं वो आपको मजबूर कर देगी रिश्ते–नातों से ऊपर उठ कर किसी की भी निःस्वार्थ भाव से मदद करने के लिए। हम बात कर रहे हैं "सूरज" की किंतु वह सूरज नहीं जो रोज आकाश में चमकता है बल्कि वह सूरज जो चंडीगढ़ की शाखा सैक्टर – 46, पंजाब एण्ड सिंध बैंक में बतौर सुरक्षा गार्ड अपनी ड्यूटी निभा रहा है।

बात जुलाई 2022 के ही एक दिन की है चंडीगढ़ में रहने वाली निधि भाटिया एवं उनके पति अमित चंडीगढ़ में ही अपने–अपने ऑफिस में थे। निधि के परिवार में उनके पति अमित के अलावा उनकी माँ और एक 9 साल की बेटी है। एक दिन दोनों पति–पत्नी को अचानक किसी अज्ञात नंबर से कॉल आई किंतु ऑफिस की व्यस्तता के कारण निधि किसी और कॉल पर व्यस्त थी। निधि ने जब वापिस उस नंबर पर कॉल की तो उसने सोचा नहीं था कि अगले आने वाले कुछ पल उसके लिए तनावपूर्ण होंगे। दरअसल उस सुबह उनकी माँ ने निधि की नौ साल की बच्ची को ट्यूशन सेंटर पर छोड़ा था। किसी कारणवश ट्यूशन सेंटर अचानक बंद हो गया और वह बच्ची अकेली इधर–उधर परेशान घूम रही थी। यह सब कुछ ट्यूशन के नजदीक सैक्टर 46 में स्थित पंजाब एण्ड सिंध बैंक का गार्ड देख रहा था उसने देखा कि वह बच्ची किस तरह परेशान इधर–उधर सहायता ढूँढ रही थी तभी सूरज ने बच्ची के पास जाकर उसके माता–पिता का नंबर लिया और उन्हें फोन किया। जब निधि को पता चला कि उनकी बेटी सूरज के पास सुरक्षित है तो उसने सूरज को कहा कि जब तक उसके घर से बच्ची को लेने कोई आ न जाए वह उसे अपने पास रखे। कुछ समय बाद निधि की माँ वहां पहुँच गई और बच्ची को सुरक्षित घर ले आई। उस तनाव भरे क्षण से गुजरने बाद निधि शाम को बैंक गई और सूरज को भरे दिल से धन्यवाद करने लगी कि उसने इन मुश्किल क्षणों में उसकी बच्ची का ध्यान रखा। इतना ही नहीं धन्यवाद के तौर पर वह सूरज के बच्चों के लिए तोहफे भी ले कर गई। सही मायने में सूरज की यह सहायता निधि एवं उसके परिवार को ताउम्र याद रहेगी।

इस घटना से विश्वास हो जाता है कि दुनिया में अभी भी अच्छे लोगों की कमी नहीं है, अच्छे इंसान अभी भी सभी दिशाओं में मौजूद हैं।

अंचल कार्यालय पंचकूला

अ0शा0 पत्र सं0 11012/01/2022-समिति-3

प्रतापराव जाधव
संसद सदस्य (लोक सभा)

संयोजक
CONVENOR
तीसरी उपसमिति
Third SUB-COMMITTEE
संसदीय राजभाषा समिति
COMMITTEE OF PARLIAMENT ON OFFICIAL LANGUAGE
11, तीन मूर्ति मार्ग,
11, TEEN MURTI MARG,
नई दिल्ली/New Delhi-110011

दिनांक: 13 अप्रैल, 2022

प्रिय श्री टशी नोरबू जी,

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति ने दिनांक 13 अप्रैल, 2022 को आपके कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में हुई प्रगति की जांच की और इस संबंध में आपसे तथा आपके सहयोगियों से विस्तार से चर्चा हुई। समिति का विश्वास है कि आप संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन पर किए गए माननीय राष्ट्रपति महोदय के आदेशों का अनुपालन करेंगे और राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी शेष लक्ष्यों को शीघ्र पूरा करेंगे तथा कार्यालय की आगामी राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इसका मूल्यांकन कर समिति सचिवालय को अविलम्ब सूचित करेंगे।

2. इस निरीक्षण कार्यक्रम के सिलसिले में आपने हर प्रकार की व्यवस्था करके अपना सहयोग प्रदान किया एवं निरीक्षण के दौरान समिति सचिवालय के साथ बराबर सम्पर्क बनाए रखा जिससे समिति को अपना कार्यक्रम सम्पन्न करने में बड़ी सुविधा हुई। इसके लिए मैं आपको विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं।

3. निरीक्षण के दौरान आपके सहयोग के लिए धन्यवाद।

आपका,

(प्रतापराव जाधव)

श्री टशी नोरबू,
प्रबंधक,
पंजाब एंड सिंध बैंक, शाखा कुल्लू,
कुल्लू-मनाली रोड, मतानी आई हॉस्पिटल के सामने,
पीओ-गांधी नगर, तहसील-दालपुर,
जिला-कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन-ध्येय है

PSB UniC
You & I Connected
नया खुदरा इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग सॉल्यूशन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

PSB UniC Biz
You & I Connected
नया कॉर्पोरेट इंटरनेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग सॉल्यूशन

एक यूनिक ऐप, सभी यूनिक सॉल्यूशन

एंडरॉइड के लिए

पीएसबी यूनिक्स बिज | पीएसबी यूनिक

आईफोन के लिए

पीएसबी यूनिक | पीएसबी यूनिक्स बिज

पीएसबी यूनिक ऐप एक ऐसा डिजिटल बैंकिंग सॉल्यूशन है जो ग्राहक को इंटरनेट, मोबाइल बैंकिंग और यूपीआई पर अद्वितीय ओमनी चौनल और निर्बाध अनुभव उपलब्ध कराता है। लाभ का आनंद लें और जीवन को आसान बनाएं !

पीएसबी यूनिक चैनल अनुभव	• इंटरनेट बैंकिंग मोबाइल बैंकिंग • सभी चौनलों पर एक क्रीडेंशियल • संयुक्त और अविरोध अनुभव • निर्बाध जीयूआई • 2 प्रमाणीकरण घटक • 24*/7 बैंकिंग, इंटरनेट और मोबाइल बैंकिंग दोनों के लिए एक बार पंजीकरण • व्यक्तिगत अनुभव • आस्ति एवं देयता के लिए एक समाधान
विशेषताएँ	• नया वर्चुअल डेबिट कार्ड • सभी खातों की जानकारी • डेबिट कार्ड से तुरंत पंजीकरण • सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए तुरंत नामांकन • एनईएफटी/आरटीजीएस/आईएमपीएस/यूपीआई/एमएमआईडी से निर्बाध भुगतान करें • आसान कार्ड प्रबंधन और सुरक्षित बैंकिंग • एफडी और आरडी खोल/बंद करें
पीएसबी यूनिक अनुरोध विशेषताएं	• चेक बुक आवेदन करना, चेक रोकना • पॉजिटिव पे • मेरा प्रमाणपत्र • स्थायी निर्देश बनाएं • नामांकन

किसी भी सहायता के लिए हमे मेल करें : **omni_support@psb.co.in | 0124-2544115/16**

हमारा अनुसरण करें: